बाल-गीत

डॉ. उम्मेदसिंह बैद 'साधक'

Published by
Shuktika Prakashan
New Alipur, Kolkata 700063

Baal-Geet
Written by Dr. Ummedsingh Baid 'Sadhak'
ISBN : 978-93-84435-23-3
Published by : **Sustika Prakashn**
Unit 8, 5th floor, Phase-1
New alipur market complex,
Kolkata 700063
1st Edition , 2016
©All rights reserved to Authour
Printed By: Mishka infotech pvt. Limited
Unit 8 5th floor, Phase 1
New alipur market complex
Kolkata 700053
Price: Rs 60/-
Cover : Pathik Sahoo

बाल-गीत

डॉ. उम्मेदसिंह बैद 'साधक'
प्रकाशक : शुक्तिका प्रकाशन
यूनिट ८, ५ फ्लोर, फेज – १
कोलकाता – ७०००६३
मुद्रक : मिसका इन्फोटेक प्रा. लिमिटेड
यूनिट ८, ५ फ्लोर, फेज १
न्यू आलीपुर मार्केट कॉम्प्लेक्स
कोलकाता- ७०००५३
मूल्य : रू ६०/-

समर्पण

शिशु-मना साधकऑ को

।

अनुक्रमणिका

बात है जीवन सार की	6
अच्छे काम करेगें हम	12
कभी नहीं डरेंगे हम	18
सह-अस्तित्व वरेगें	24
हम	30
जीवन विद्या सार है	36
करुणा कृपा अपार है	42
व्यापक में मैं भींगा हूँ	48
चार अवस्था धन्य है	53
प्रियहित लाभ में पाप	59
है	65
भय से कुछ ना मानेगें	68
मैं आता हूँ	70
चौतरफा हैं खुशियाँ	71
याद तुम्हारी मन में	72
गुड़िया	74
	75

मरु-माटी की याद 76
पानी रे पानी
रिमझिम वर्षा
प्रतिबिम्बन

अध्ययन निरंतर क्रम 77
से 79
तन-मन हर्षित मेरा 80
वह दुधिया मुस्कान 81
मन कंटकमय मेरा 83
सरल-राजमार्ग 84
सुनो 'धृति' का कहना 85
मानव सीखेगा मानव 86
से 87
संगच्छध्वं 89
संकल्प- संबल 90
कोई नहीं पराया 92
हाल तेरा मस्ताना 93
आजा मेरे पास 94
सह-अस्तित्व दर्शन
कविता की लड़ियाँ

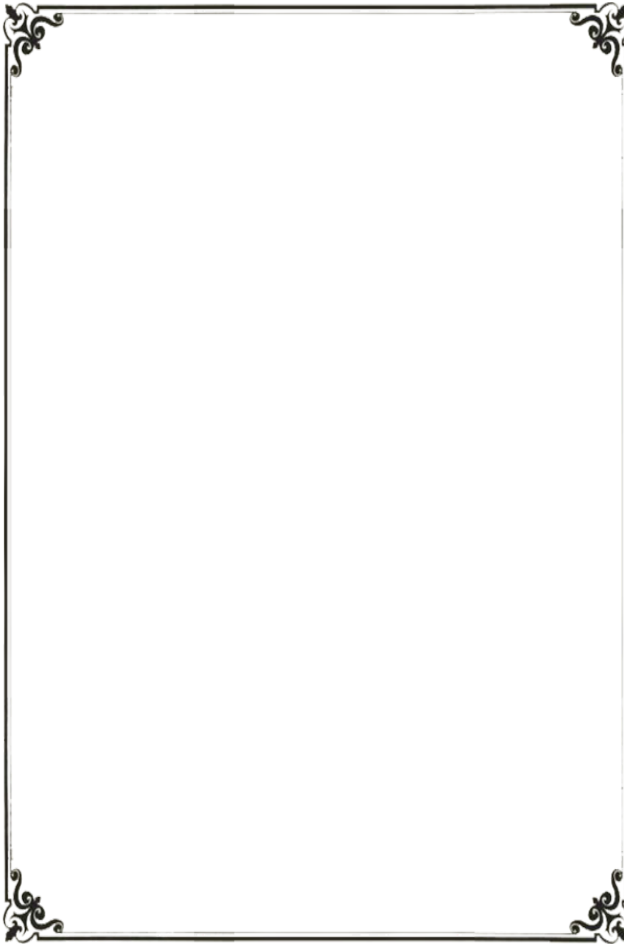

बात है जीवन सार की

नायक - हाथी घोड़ा पालकी,
बात है जीवन सार की ।

समूह - बात है जीवन सार की,
बात है जीवन सार की ।

नायक - बात है जीवन सार की,
मानव मानव एक हैं ॥

समूह - मानव मानव एक है,
मानव मानव एक है ।

नायक - मानव मानव एक है,
सारे मानव नेक हैं ।

समूह - सारे मानव नेक है,
सारे मानव नेक है ।

नायक - सारे मानव नेक है,
हम भी पूरे नेक हैं ॥

समूह - हम भी पूरे नेक है,
हम भी पूरे नेक है ।

नायक - हम भी पूरे नेक है,
नेकता में एक हैं ।

समूह - नेकता में एक हैं,
नेकता में एक हैं ।

नायक - नेकता में एक हैं,
समझ बने तो नेक है ॥

समूह - समझ बने तो नेक हैं,
समझ बने तो नेक हैं ।

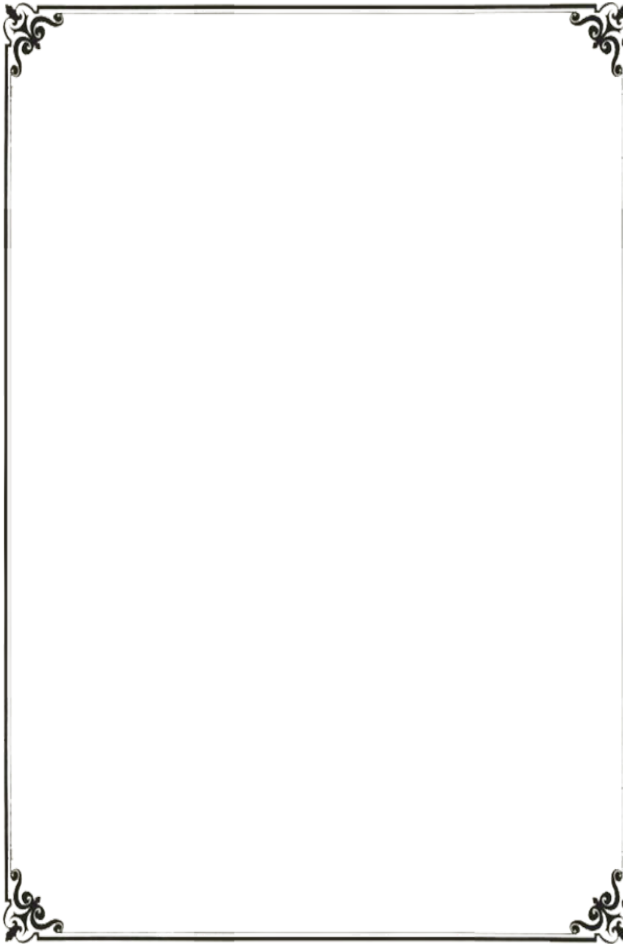

नायक - समझ बने तो नेक हैं,
भम्र से भिन्न अनेक हैं ।

समूह - भम्र से भिन्न अनेक हैं,
भम्र से भिन्न अनेक हैं ।

नायक - भम्र से भिन्न अनेक हैं,
सही में सारे एक हैं ॥

समूह - सही में सारे एक हैं,
सही में सारे एक हैं ।

नायक - सही में सारे एक हैं,
भूल में अनेक हैं ॥

समूह - भूल में अनेक हैं,
भूल में अनेक हैं ॥

नायक - भूल में अनेक हैं,
लेकिन हम तो नेक हैं ।

समूह - लेकिन हम तो नेक हैं,
लेकिन हम तो नेक हैं ॥

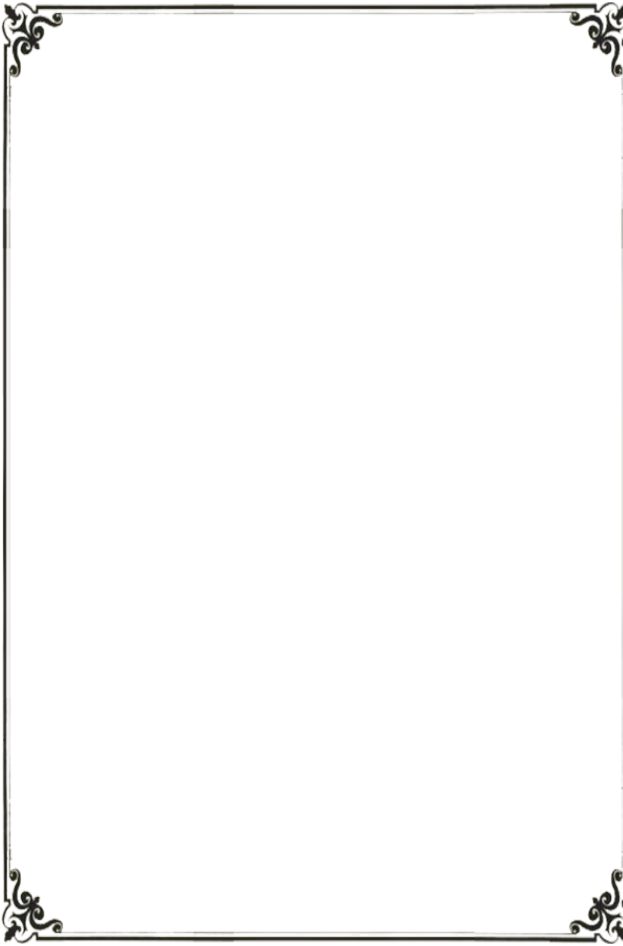

नायक - लेकिन हम तो नेक हैं,
हम भी पूरे नेक हैं ।

समूह - हम भी पूरे नेक हैं,
हम भी पूरे नेक हैं ॥

नायक - हम भी पूरे नेक हैं,
हाथी घोड़ा पालकी ।

सब - हाथी घोड़ा पालकी,
बात है जीवन सार की ॥
बात है जीवन सार की,
बात है जीवन सार की । 1

अच्छे काम करेगें हम

नायक - बात है जीवन सार की,
अच्छे काम करेगें हम

समूह - अच्छे काम करेगें हम,
अच्छे काम करेगें हम ।

नायक - अच्छे काम करेगें हम
सच्चे काम करेगें हम ॥

समूह - सच्चे काम करेगें हम,
सच्चे काम करेगें हम ।

नायक - सच्चे काम करेगें हम,
ऊँचे काम करेगें हम ।

समूह - ऊँचे काम करेगें हम,
ऊँचे काम करेगें हम ।

नायक - ऊँचे काम करेगें हम
जग में नाम करेगें हम ॥

समूह - जग में नाम करेगें हम,
जग में नाम करेगें हम ।

नायक - जग में नाम करेगें हम,
मिलकर काम करेगें हम

समूह - मिलकर काम करेगें हम,
मिलकर काम करेगें हम

नायक - मिलकर काम करेगें हम,
हँसकर काम करेगें हम

समूह - हँसकर काम करेगें हम,
हँसकर काम करेगें हम

नायक - हँसकर काम करेगें हम
खुश होकर काम करेगें हम

समूह - खुश होकर काम करेगें हम,
खुश होकर काम करेगें हम

नायक - खुश करके काम करेगें हम,
कविता खूब करेगें हम

समूह - कविता खूब करेगें हम,
कविता खूब करेगें हम ॥

नायक - कविता खूब करेगें हम,
नाचेगें गायेगें हम ।

समूह - नाचेगें गायेगें हम,
नाचेगें गायेगें हम ।

नायक - नाचेगें गायेगें हम,
जीवन को समझेगें हम ।

समूह - जीवन को समझेगें हम,
जीवन को समझेगें हम ।

नायक - जीवन को समझेगें हम,
हाथी घोड़ा पालकी ॥

सब - हाथी घोड़ा पालकी,
बात है जीवन सार की॥
बात है जीवन सार की,
हाथी घोड़ा पालकी ।2

कभी नहीं डरेंगे हम

नायक - बात है जीवन सार की,
कभी नहीं डरेंगे हम ।

समूह - कभी नहीं डरेंगे हम,
कभी नहीं डरेंगे हम ।

नायक - कभी नहीं डरेंगे हम,
डरकर नहीं मरेंगे हम ॥

समूह - डरकर नहीं मरेगें हम,
डरकर नहीं मरेगें हम ।

नायक – डरकर नहीं मरेगें हम,
सचमुच अमर बनेगें हम।

समूह - सचमुच अमर बनेगें हम,
सचमुच अमर बनेगें हम

नायक - सचमुच अमर बनेगें हम,
प्रकृति को समझेगें हम

समूह - प्रकृति को समझेगें हम,
प्रकृति को समझेगें हम

नायक - प्रकृति को समझेगें हम,
समझदार बनेगें हम ।

समूह - समझदार बनेगें हम,
समझदार बनेगें हम ।

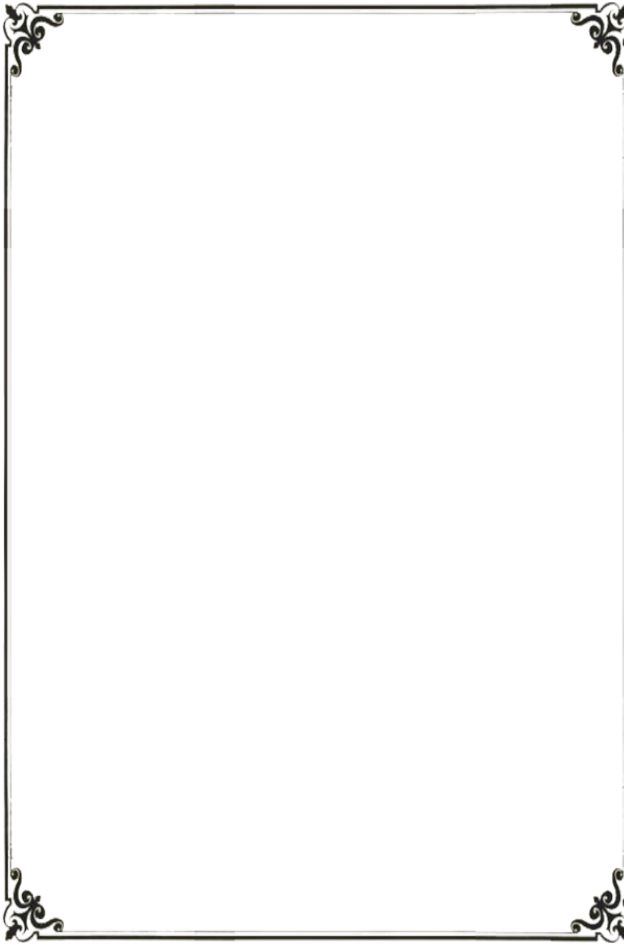

नायक - समझदार बनेगें हम,
जिम्मेदार बनेगें हम ॥

समूह - जिम्मेदार बनेगें हम
जिम्मेदार बनेगें हम ।

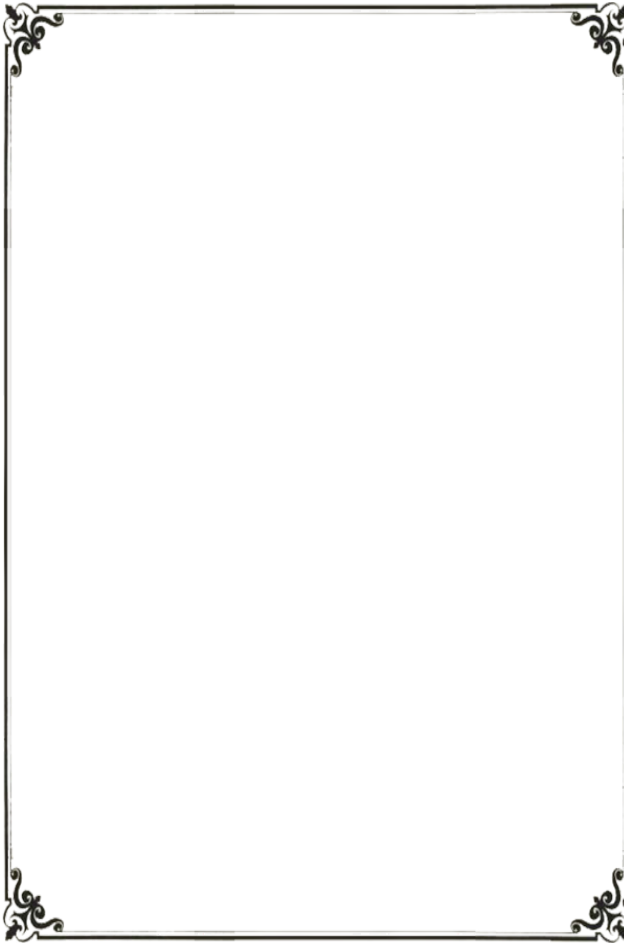

नायक - जिम्मेदार बनेगें हम
भागीदार बनेगें हम ।

समूह - भागीदार बनेगें हम,
भागीदार बनेगें हम ।

नायक - भागीदार बनेगें हम
दुनियां ठीक करेगें हम ॥

समूह - दुनियां ठीक करेगें हम
दुनियां ठीक करेगें हम ।

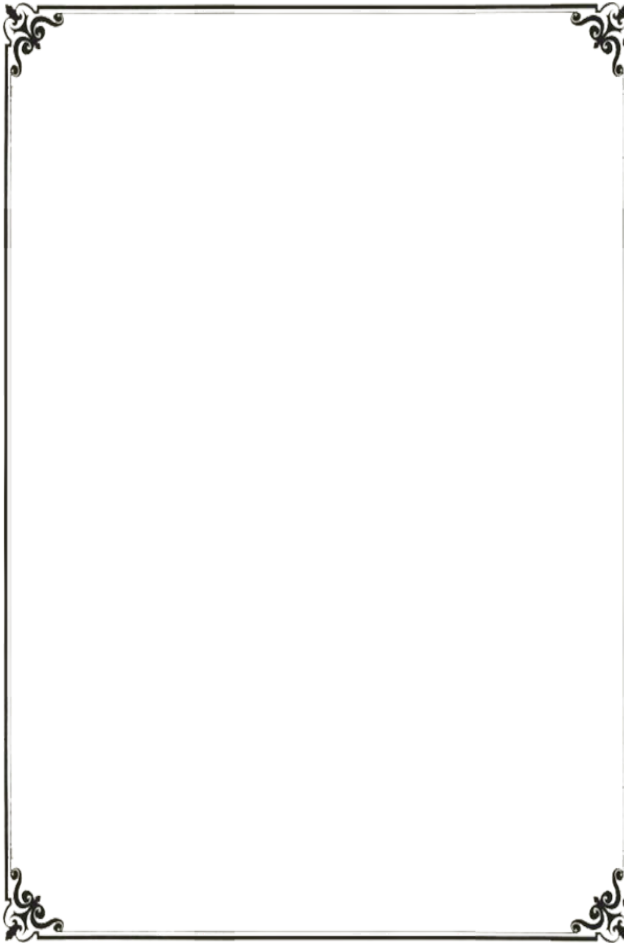

नायक - दुनियां ठीक करेगें
सबका न्याय करेगें हम ।

समूह - सबका न्याय करेगें हम,
सबका न्याय करेगें हम ।

नायक - सबका न्याय करेगें
सबसे प्रेम करेगें हम ॥

समूह - सबसे प्रेम करेगें हम
सबसे प्रेम करेगें हम॥

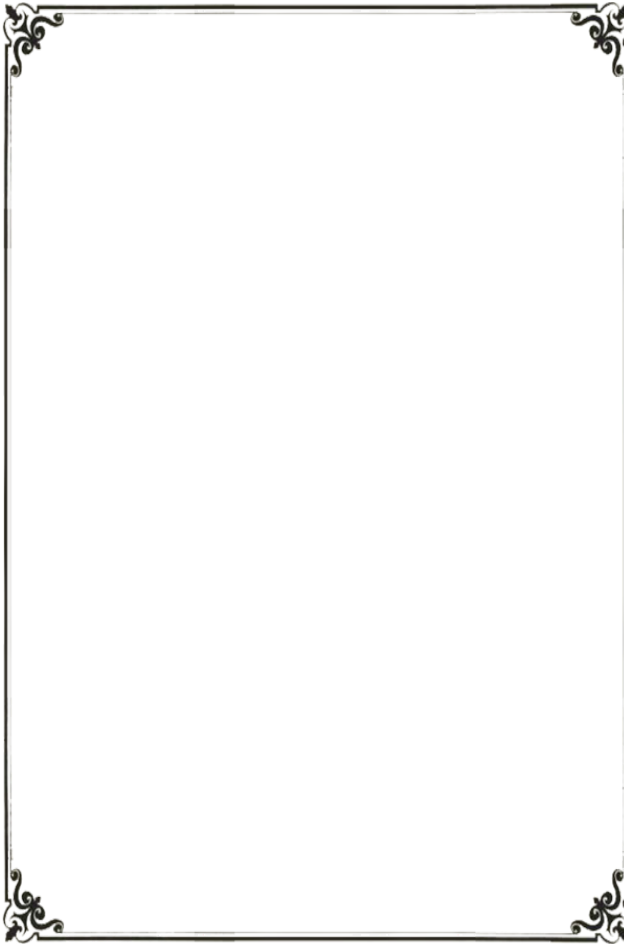

नायक - सबसे प्रेम करेगें हम
हाथी घोड़ा पालकी ।

समूह - हाथी घोड़ा पालकी
बात है जीवन सार की ॥

बात है जीवन सार की
बात है जीवन सार की॥3

सह-अस्तित्व वरेगें हम

नायक - बात है जीवन सार की
सह-अस्तित्व वरेगें हम ।

समूह - सह-अस्तित्व वरेगें हम,
सह-अस्तित्व वरेगें हम

नायक - सह-अस्तित्व वरेगें हम,
अस्तित्व जानेगें हम

समूह - अस्तित्व जानेगें हम,
अस्तित्व जानेगें हम।

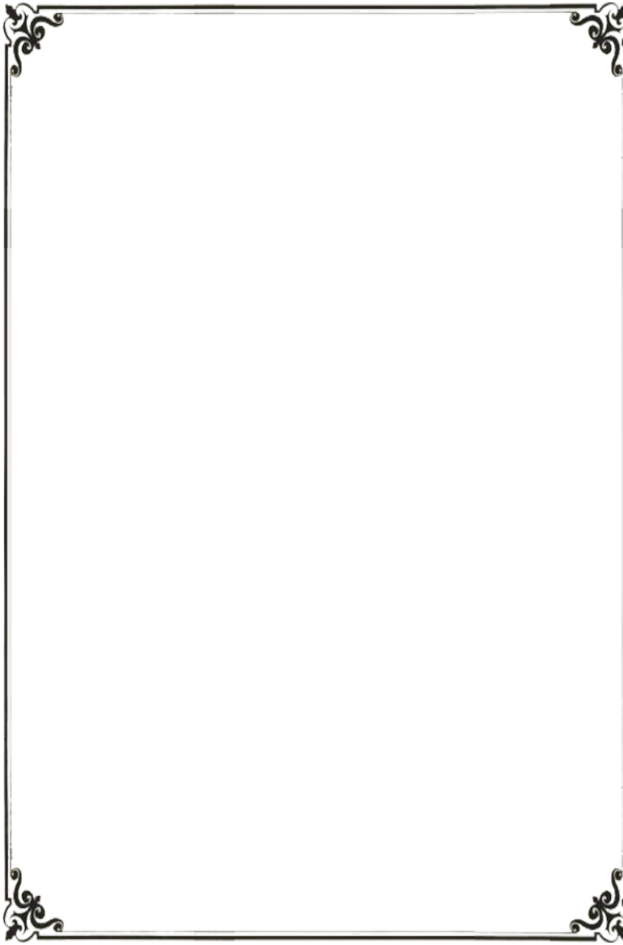

नायक - अस्तित्व जानेगें हम
व्यापक को जानेगें हम ।

समूह - व्यापक को जानेगें हम,
व्यापक को जानेगें हम॥

नायक - व्यापक को जानेगें हम
ईश्वर को समझेगें हम ॥

समूह - ईश्वर को समझेगें हम
ईश्वर को समझेगें हम । ।

नायक - ईश्वर को समझेगें हम
सत्ता पहचानेगें हम ।

समूह - सत्ता पहचानेगें हम
सत्ता पहचानेगें हम॥

नायक - सत्ता पहचानेगें हम
व्यवस्था जानेगें हम ॥

समूह - व्यवस्था जानेगें हम
व्यवस्था जानेगें हम॥

नायक - व्यवस्था जानेगें हम,
व्यवस्था मानेगें हम ।

समूह - व्यवस्था मानेगें हम
व्यवस्था मानेगें हम ।

नायक - व्यवस्था मानेगें हम,
नाचेगें,गायेगें हम ॥

समूह - नाचेगें,गायेगें हम;
नाचेगें,गायेगें हम॥

नायक - नाचेगें,गायेगें हम
उत्सव मनायेगें हम ।

समूह - उत्सव मनायेगें हम,
उत्सव मनायेगें हम ।

नायक - उत्सव मनायेगें हम;
झूमेगें,गायेगें हम ॥

समूह - झूमेगें,गायेगें हम
झूमेगें,गायेगें हम ।

नायक - झूमेगें,गायेगें हम;
हाथी घोड़ा पालकी ।

समूह - हाथी घोड़ा पालकी
बात है जीवन सार की ॥
बात है जीवन सार की,
बात है जीवन सार की।4

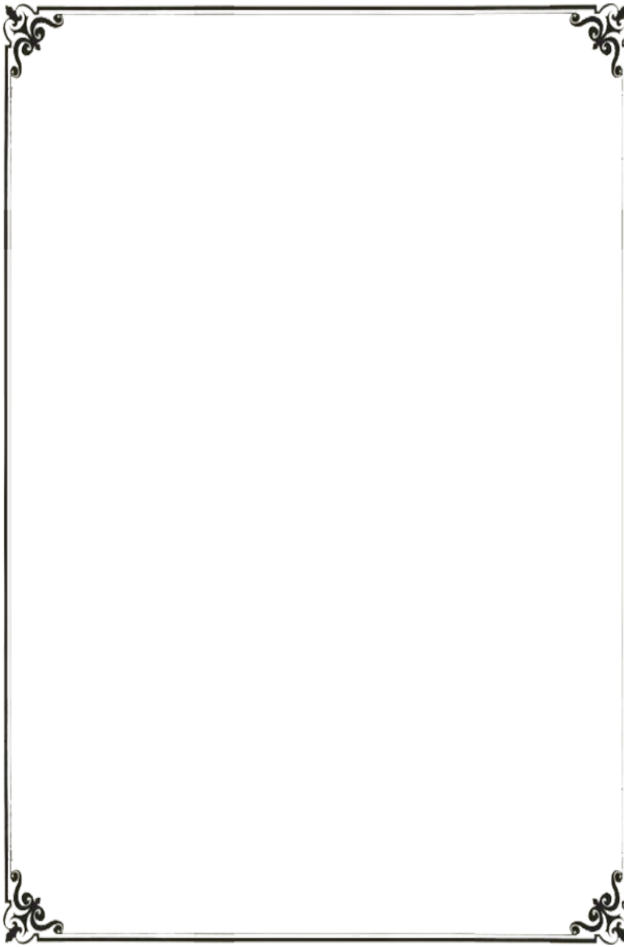

जीवन विद्या सार है

नायक - बात है जीवन सार की,
जीवन विद्या सार है ।

समूह - जीवन विद्या सार है,
जीवन विद्या सार है॥

नायक - जीवन विद्या सार है,
मानवता का सार है ॥

समूह - मानवता का सार है,
मानवता का सार है ।

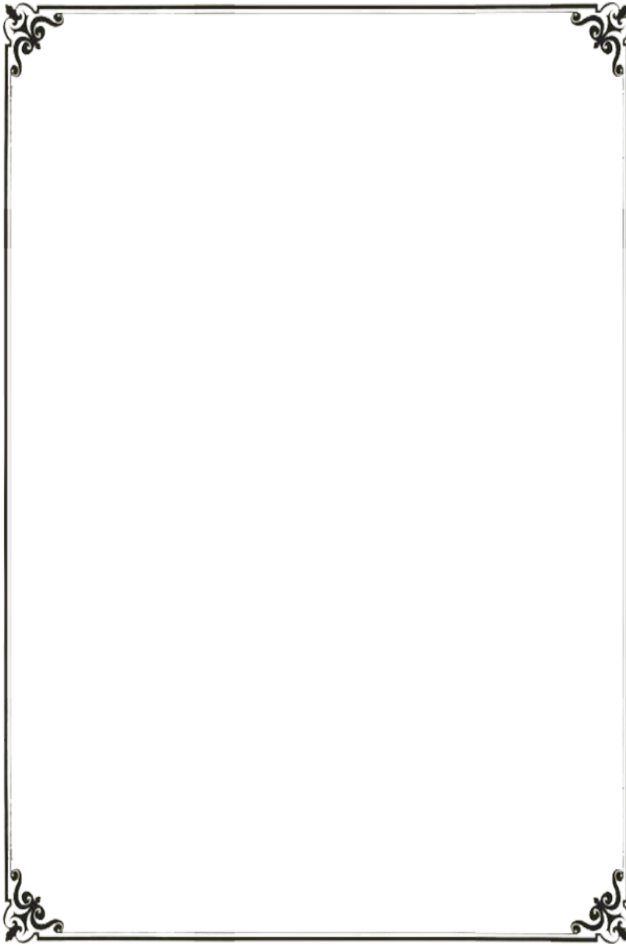

नायक - मानवता का सार है,
सृष्टि पर उपकार है ।

समूह - सृष्टि पर उपकार है,
सृष्टि पर उपकार है।

नायक - सृष्टि पर उपकार है,
धरा बचाना सार है ॥

समूह - धरा बचाना सार है
धरा बचाना सार है॥

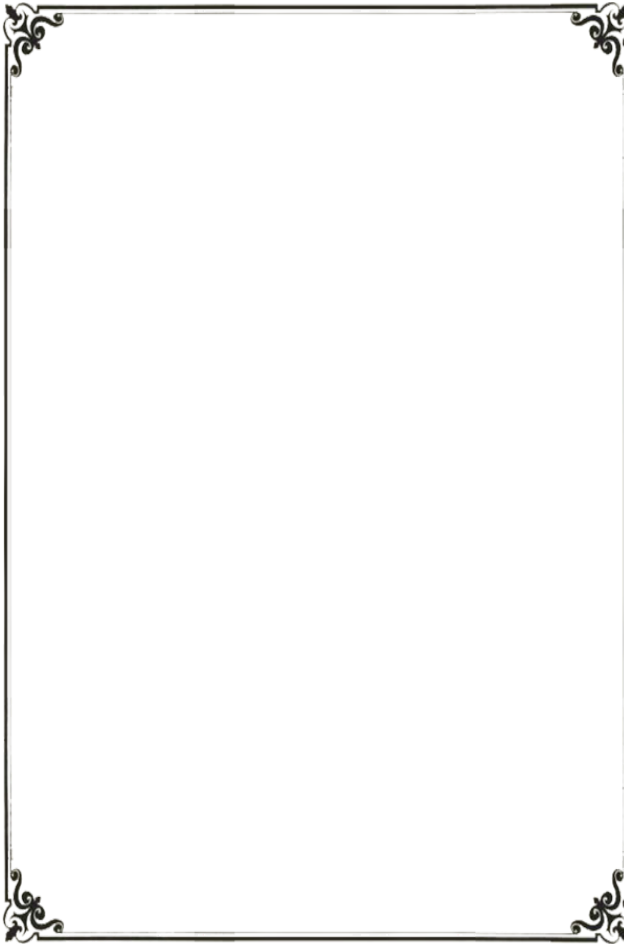

नायक - धरा बचाना सार है,
पर्यावरण बीमार है ।

समूह - पर्यावरण बीमार है,
पर्यावरण बीमार है॥

नायक - पर्यावरण बीमार है,
दृष्टि बदलना सार है ॥

समूह - दृष्टि बदलना सार है,
दृष्टि बदलना सार है ।

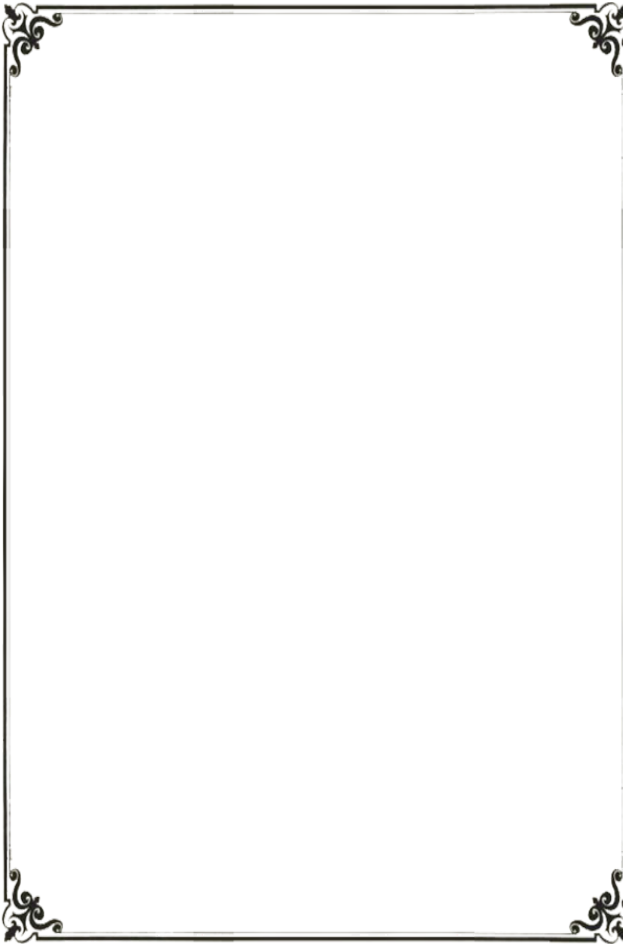

नायक - दृष्टि बदलना सार है
पशुता से उद्धार है ।

समूह - पशुता से उद्धार है,
पशुता से उद्धार है

नायक - पशुता से उद्धार है,
राक्षस पद निःसार है ॥

समूह - राक्षस पद निःसार है,
राक्षस पद निःसार है

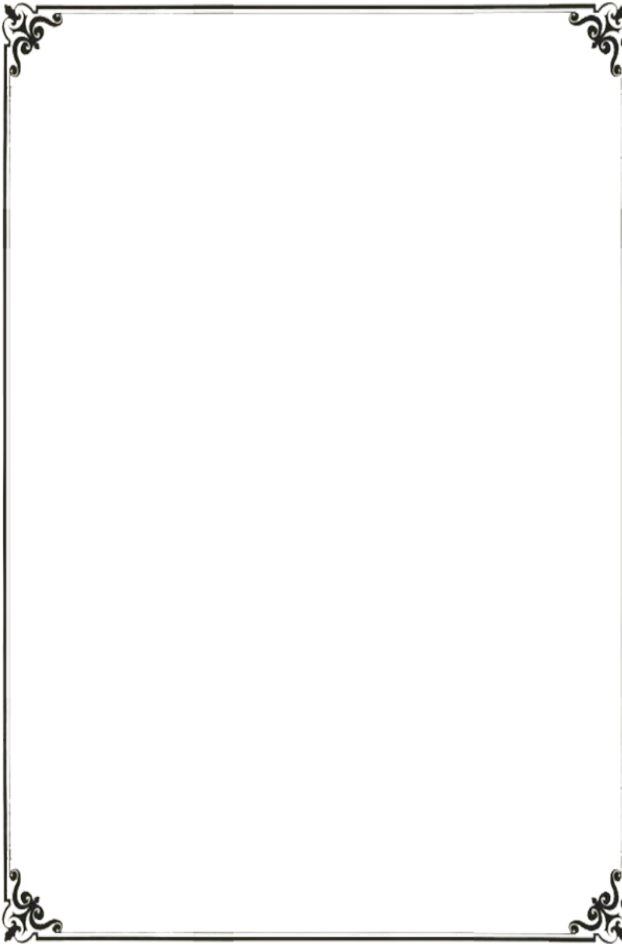

नायक - राक्षस पद निःसार है,
मानव पद से प्यार है ।

समूह - मानव पद से प्यार है
मानव पद से प्यार है।

नायक - मानव पद से प्यार है
देव पद से प्यार है ॥

समूह - देव पद से प्यार है,
देव पद से प्यार है ।

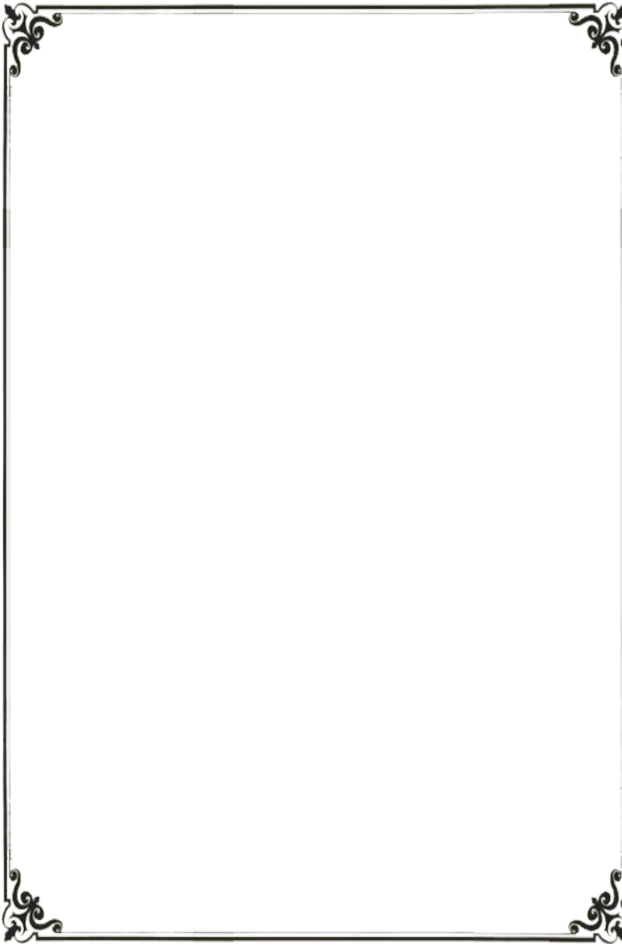

नायक - देव पद से प्यार है,
दिव्यता अपार है ।

समूह -दिव्यता अपार है
दिव्यता अपार है ॥

नायक - दिव्यता अपार है
हाथी घोड़ा पालकी ॥

सब - हाथी घोड़ा पालकी,
बात है जीवन सार की ॥
बात है जीवन सार की
हाथी घोड़ा पालकी ॥5

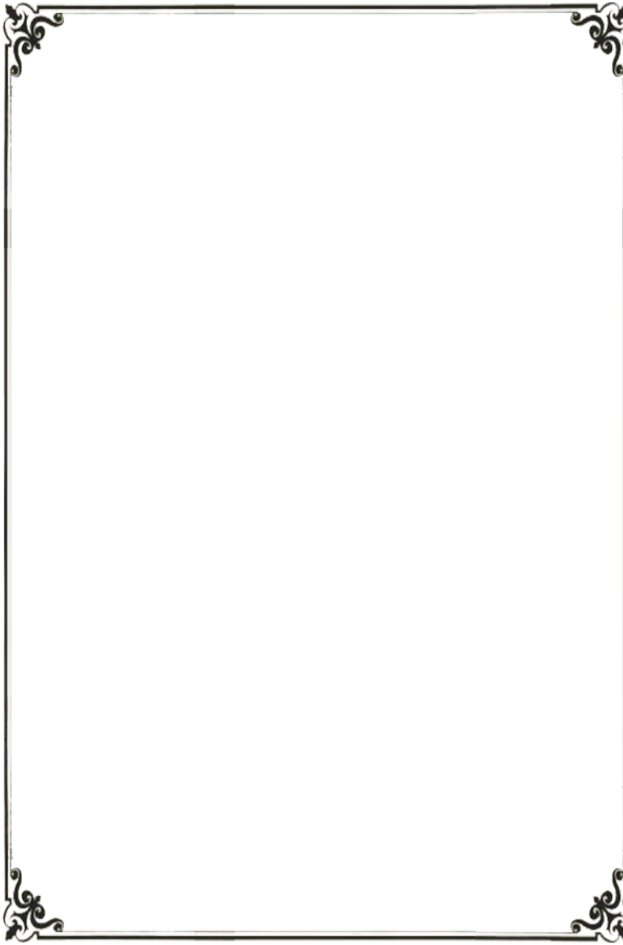

करुणा कृपा अपार है

नायक - बाबा बहुत उदार है,
करुणा कृपा अपार है ॥

समूह - करुणा कृपा अपार है
करुणा कृपा अपार है ॥

नायक - करुणा कृपा अपार है
सत्ता में अधिकार है ।

समूह - सत्ता में अधिकार है,
सत्ता में अधिकार है॥

नायक - सत्ता में अधिकार है
वे प्रकृति के पार हैं ॥

समूह - वे प्रकृति के पार हैं,
वे प्रकृति के पार हैं॥

नायक - वे प्रकृति के पार हैं
उन्हें समझना सार है ।

समूह - उन्हे समझना सार है,
उन्हे समझना सार है॥

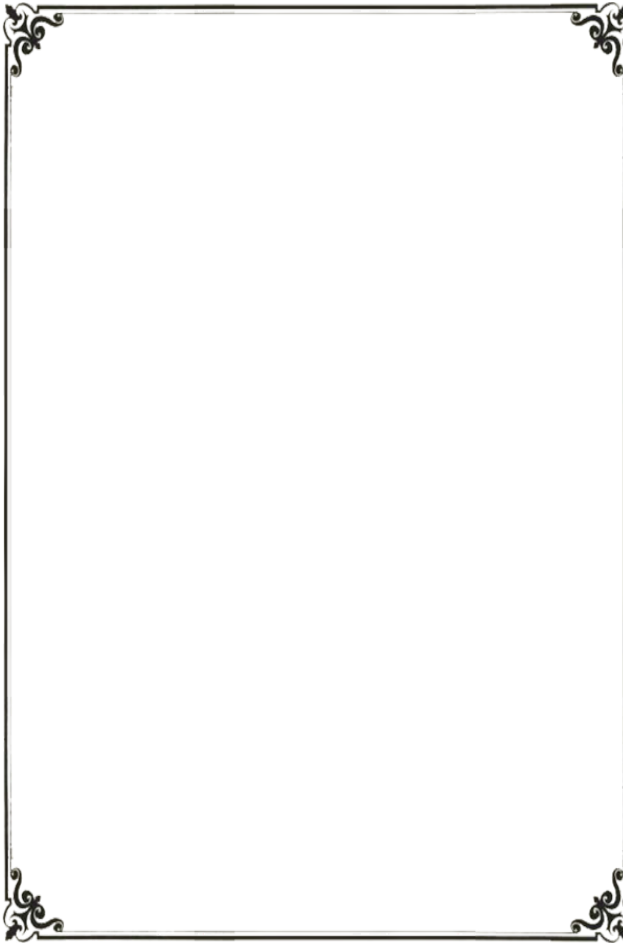

नायक - उन्हे समझना सार है ,
नैया खेवनहार है ॥

समूह - नैया खेवनहार है,
नैया खेवनहार है,

नायक – नैया खेवनहार है,
हम भी तो तैयार हैं ।

समूह - हम भी तो तैयार हैं,
हम भी तो तैयार हैं ।

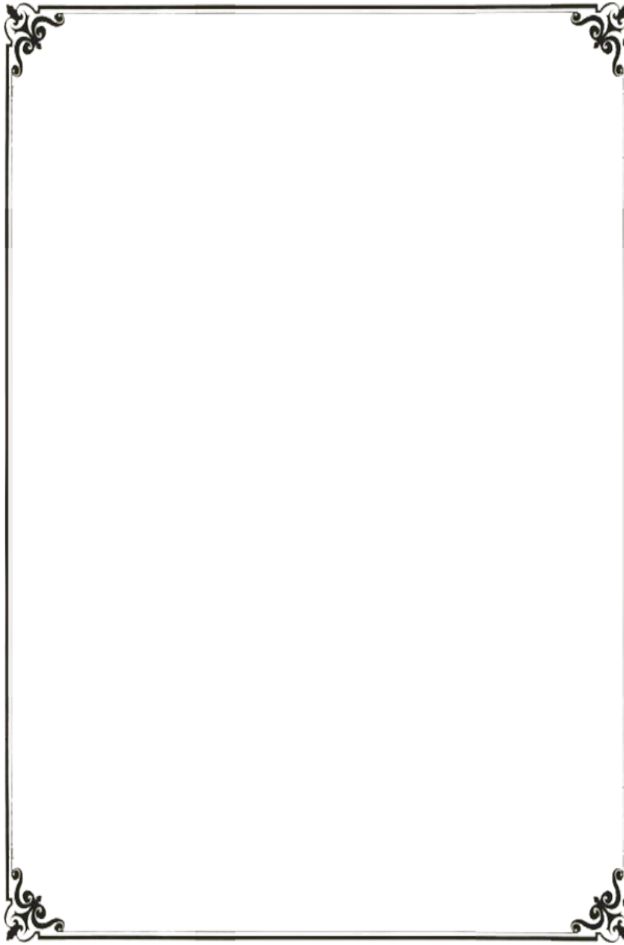

नायक - हम भी तो तैयार हैं,
करना निज उद्धार है ॥

समूह - करना निज उद्धार है,
करना निज उद्धार है

नायक - करना निज उद्धार है,
समझ बनाना सार है ।

समूह - समझ बनाना सार है
समझ बनाना सार है॥

नायक - समझ बनाना सार है,
भम्र से बचना सार है ॥

समूह - भम्र से बचना सार है,
भम्र से बचना सार है

नायक - भम्र से बचना सार
जागृति-क्रम ही सार है ।

समूह - जागृति-क्रम ही सार है
जागृति-क्रम ही सार है

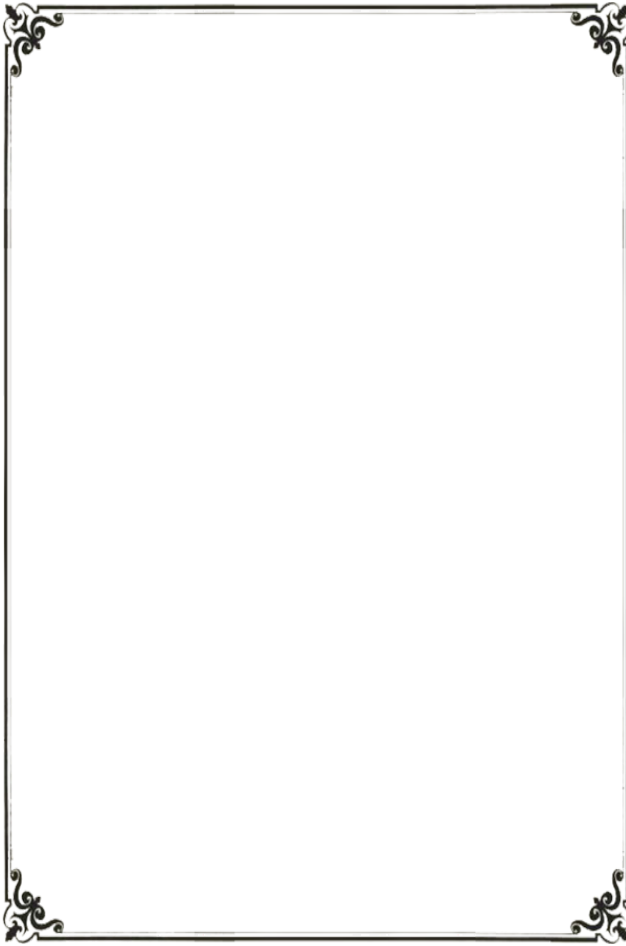

नायक - जागृति-क्रम ही सार है,
हाथी घोड़ा पालकी ॥

सब - हाथी घोड़ा पालकी,
बात है जीवन सार की
बात है जीवन सार की,
हाथी घोड़ा पालकी । 6

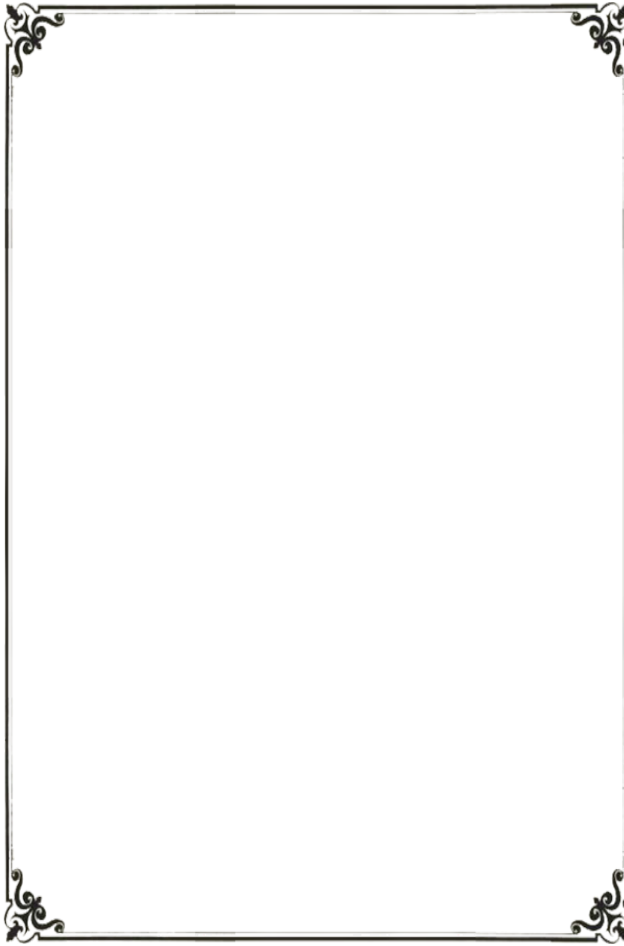

व्यापक में मैं भींगा हूँ

नायक - बात है जीवन सार की,
व्यापक में मैं भींगा हूँ ॥

समूह - व्यापक में मैं भींगा हूँ,
व्यापक में मैं भींगा हूँ

नायक – व्यापक में मैं भींगा हूँ
व्यापक में मैं घिरा हूँ ।

समूह - व्यापक में मैं घिरा हूँ
व्यापक में मैं घिरा हूँ ।

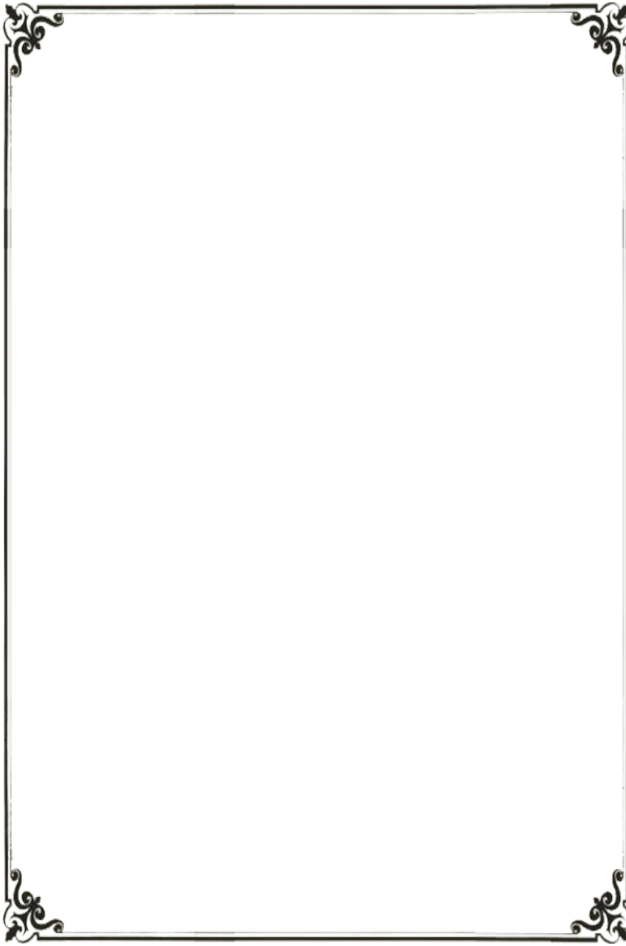

नायक – व्यापक में मैं घिरा हूँ
इसलिये नियंत्रित हूँ ॥

समूह - इसलिये नियंत्रित हूँ,
इसलिये नियंत्रित हूँ,

नायक - इसलिये नियंत्रित हूँ,
इसलिये उर्जस्वित हूँ ।

समूह - इसलिये उर्जस्वित हूँ
इसलिये उर्जस्वित हूँ

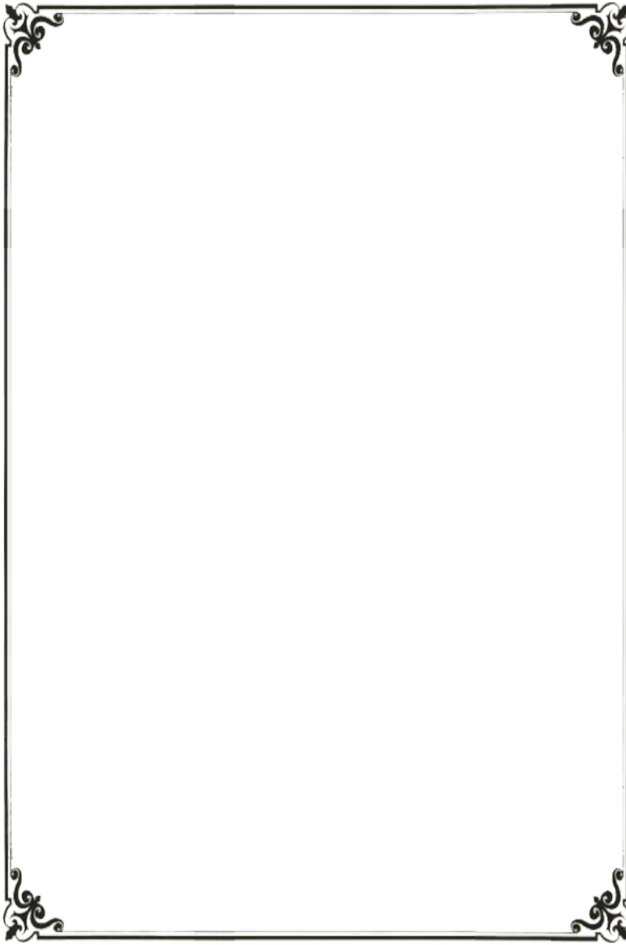

नायक - इसलिये उर्जस्वित हूँ
इसलिये उत्सवित हूँ,

समूह - इसलिये उत्सवित हूँ,
इसलिये उत्सवित हूँ,

नायक - इसलिये उत्सवित हूँ,
इसलिये सक्रिय हूँ ॥

समूह - इसलिये सक्रिय हूँ
इसलिये सक्रिय हूँ

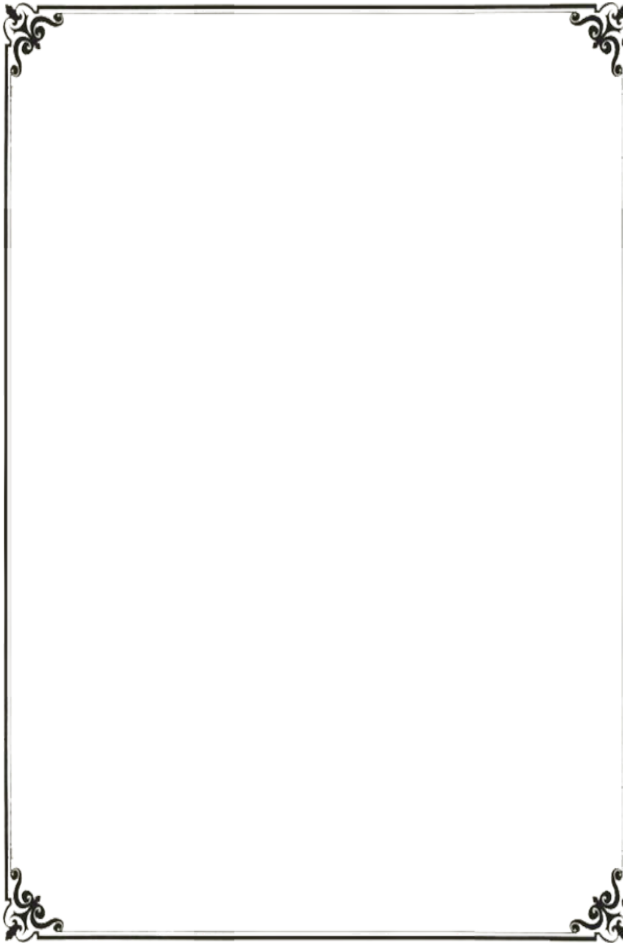

नायक - इसलिये सक्रिय हूँ,
मैं सबका ही प्रिय हूँ ।

समूह - मैं सबका ही प्रिय हूँ
मैं सबका ही प्रिय हूँ ।

नायक - मैं सबका ही प्रिय हूँ,
मैं तो न्याय प्रिय हूँ ॥

समूह - मैं तो न्याय प्रिय हूँ,
मैं तो न्याय प्रिय हूँ

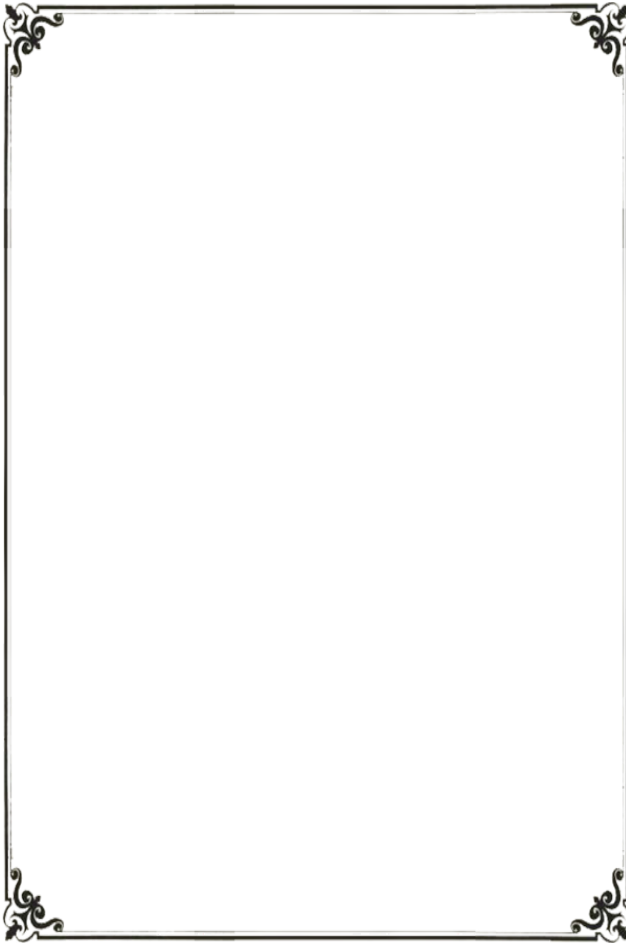

नायक - मैं तो न्याय प्रिय हूँ
हाँ मैं धर्म समर्पित हूँ ।

समूह - हाँ मैं धर्म समर्पित हूँ ,
हाँ मैं धर्म समर्पित हूँ ।

नायक - हाँ मैं धर्म समर्पित हूँ,
हाँ मैं न्याय समर्पित हूँ ॥

समूह - हाँ मैं न्याय समर्पित हूँ,
हाँ मैं न्याय समर्पित हूँ ।

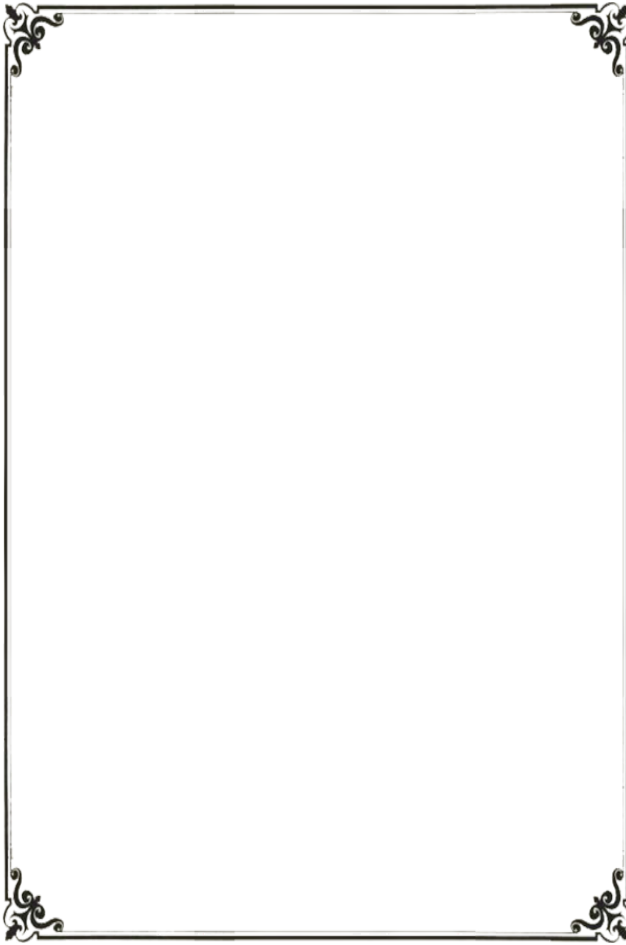

नायक – हाँ मैं न्याय समर्पित हूँ
पूरा सत्य समर्पित हूँ,

समूह - पूरा सत्य समर्पित हूँ,
पूरा सत्य समर्पित हूँ,

नायक - पूरा सत्य समर्पित हूँ,
हाथी घोड़ा पालकी ॥

समूह - हाथी घोड़ा पालकी,
बात है जीवन सार की
बात है जीवन सार की,
हाथी घोड़ा पालकी । 7

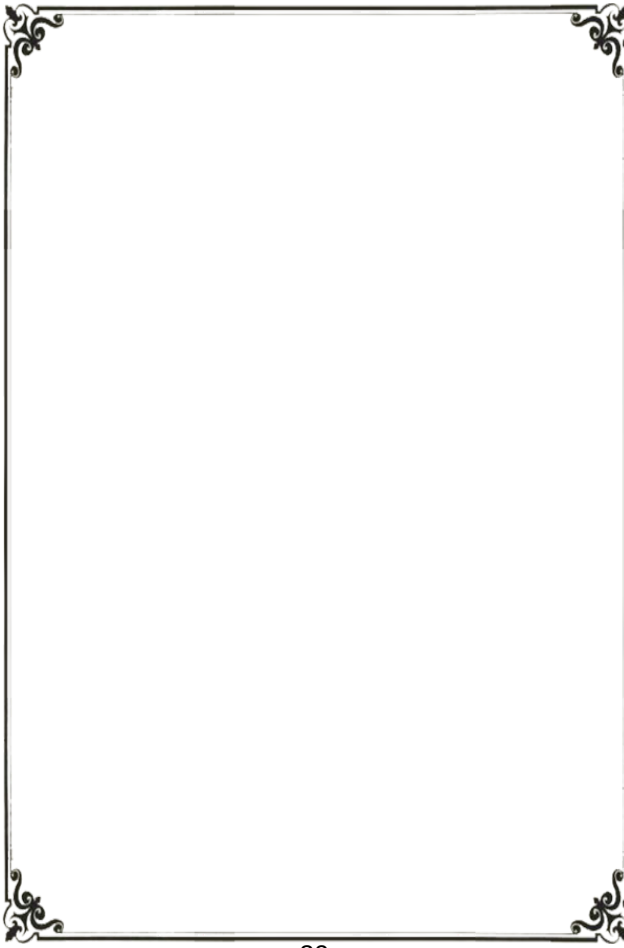

चार अवस्था धन्य है

नायक - बात है जीवन सार की,
चार अवस्था धन्य है ॥

समूह - चार अवस्था धन्य है,
चार अवस्था धन्य है ॥

नायक - चार अवस्था धन्य है,
पशुमानव भ्रममग्न है ।

समूह - पशुमानव भ्रममग्न है ।
पशुमानव भ्रममग्न है ।

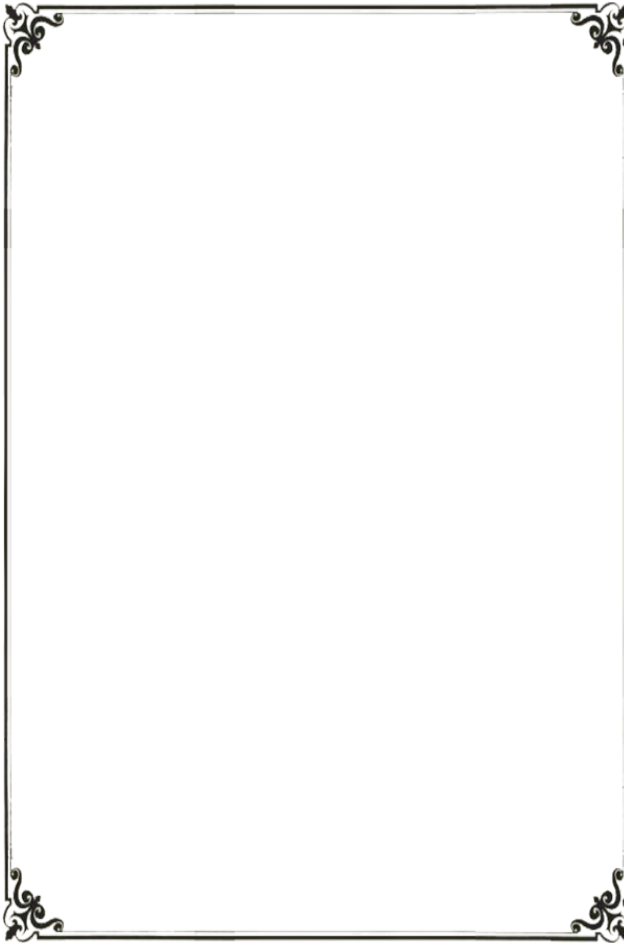

नायक - पशुमानव भ्रममग्न है,
राक्षस भी भ्रममग्न है ॥

समूह - राक्षस भी भ्रममग्न है,
राक्षस भी भ्रममग्न है ॥

नायक - राक्षस भी भ्रममग्न है,
मानव पद निर्विघ्न है ।

समूह - मानव पद निर्विघ्न है ,
मानव पद निर्विघ्न है ।

नायक - मानव पद निर्विघ्न है ,
देव पद सम्मान्य है ॥

समूह - देव पद सम्मान्य है,
देव पद सम्मान्य है ।

नायक – देव पद सम्मान्य है,
दिव्यता ही धन्य है ।

समूह - दिव्यता ही धन्य है ।
दिव्यता ही धन्य है ।

नायक - दिव्यता ही धन्य है ।
प्रकृति-उत्सव धन्य है ॥

समूह - प्रकृति-उत्सव धन्य है,
प्रकृति-उत्सव धन्य है ॥

नायक - प्रकृति-उत्सव धन्य है,
सह-अस्तित्व धन्य है ।

समूह - सह-अस्तित्व धन्य है
सह-अस्तित्व धन्य है ।

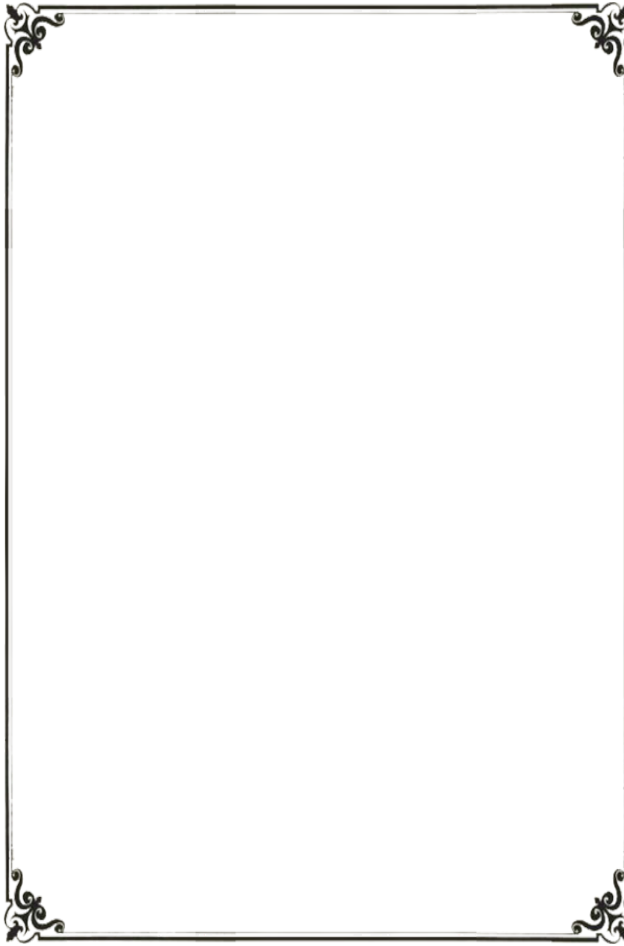

नायक - सह-अस्तित्व धर्म है ,
अस्तित्व धन-धन्य है ॥

समूह - अस्तित्व धन-धन्य है,
पल पल कण कण धन्य है ।

नायक - पल पल कण कण धन्यहै ,
चार अवस्था धन्य है ॥

समूह - चार अवस्था धन्य है
हाथी घोड़ा पालकी ।
हाथी घोड़ा पालकी ,
बात है जीवन सार की॥

8

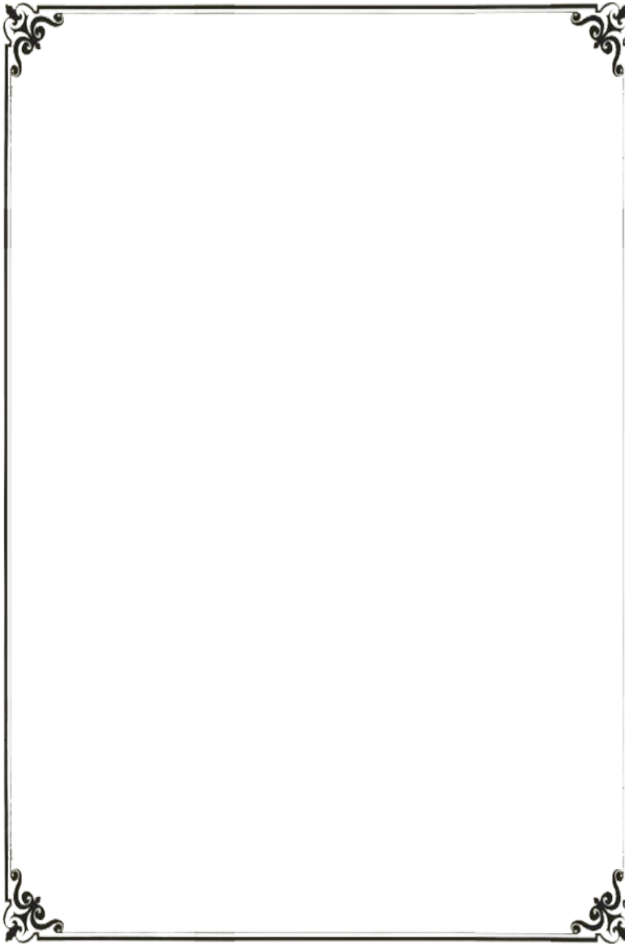

प्रियहित लाभ में पाप है

नायक - बात है जीवन सार की ,
प्रियहित लाभ में पाप है ।

समूह - प्रियहित लाभ में पाप
प्रियहित लाभ में पाप ।

नायक - प्रियहित लाभ में पाप है ,
न्याय धर्म निस्पाप है ॥

समूह - न्याय धर्म निस्पाप है ,
न्याय धर्म निस्पाप है ॥

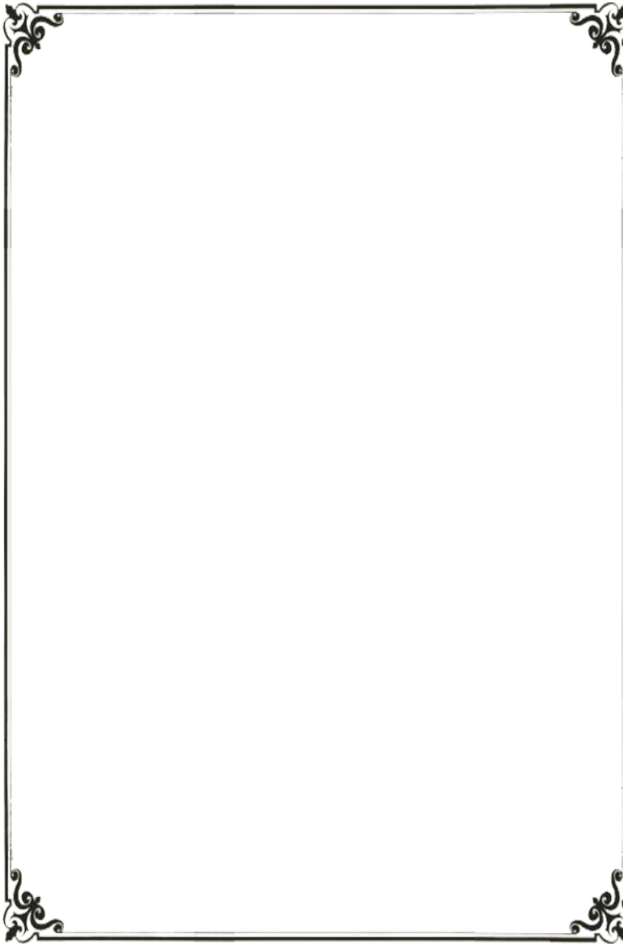

नायक - न्याय धर्म निस्पाप है,
सत्य धर्म निस्पाप है ।

समूह - सत्य धर्म निस्पाप है ,
सत्य धर्म निस्पाप है ।

नायक - सत्य धर्म निस्पाप है,
चरम सत्य ही प्राप्त है ॥

समूह - चरम सत्य ही प्राप्त है,
चरम सत्य ही प्राप्त है ।

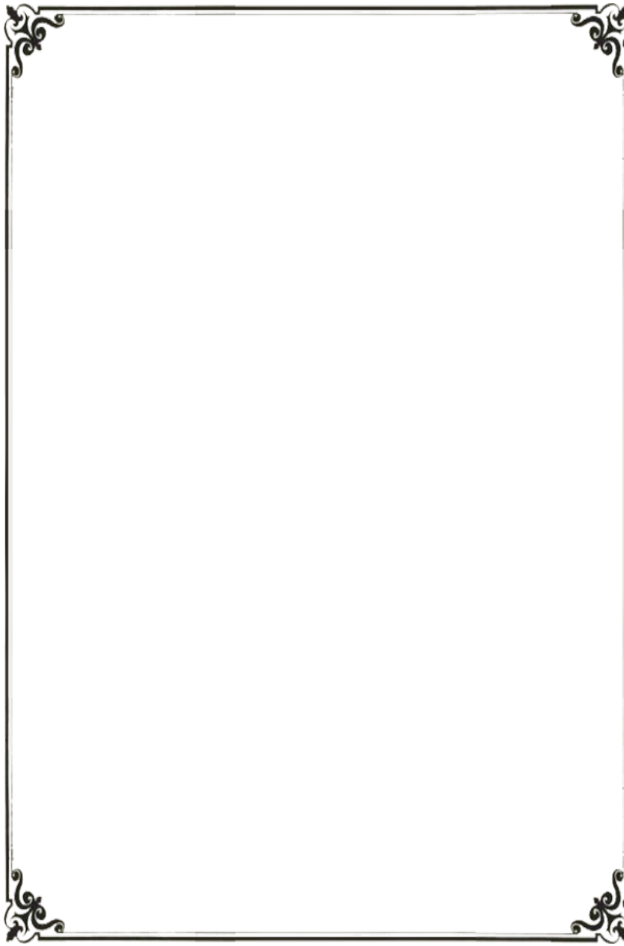

नायक - चरम सत्य ही प्राप्त है,
व्यापक सदा अमाप्य है ।

समूह - व्यापक सदा अमाप्य है,
व्यापक सदा अमाप्य है ।

नायक - व्यापक सदा अमाप्य है ,
फिर भी व्यापक प्राप्त है ॥

समूह - फिर भी व्यापक प्राप्त है,
फिर भी व्यापक प्राप्त है ॥

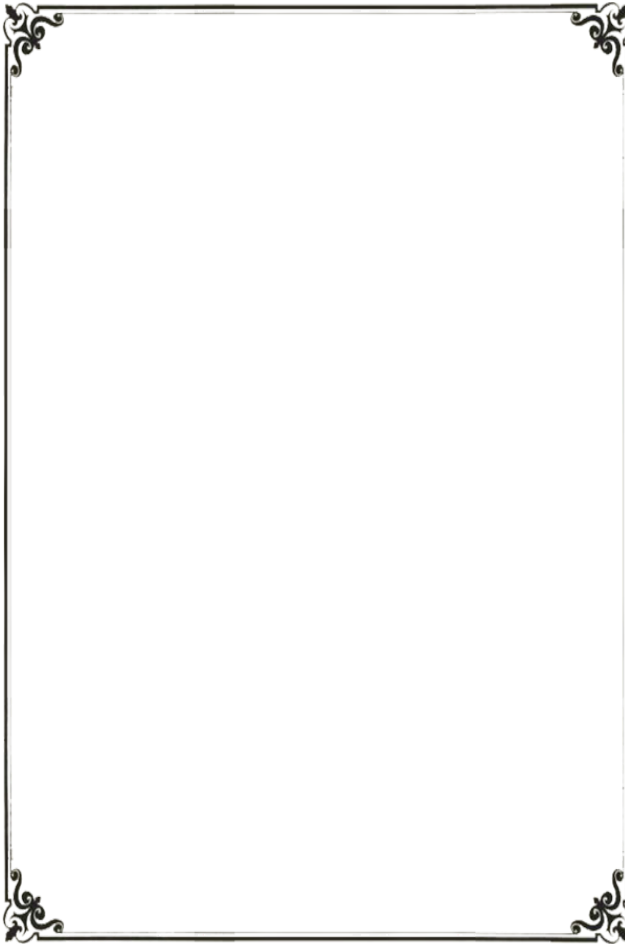

नायक - फिर भी व्यापक प्राप्त है,
व्यापक मैं हम प्राप्त है
।

समूह - व्यापक मैं हम प्राप्त है,
व्यापक मैं हम प्राप्त है ।

नायक – व्यापक मैं हम प्राप्त है ।
शाश्वत वाणी आप्त है,

समूह - शाश्वत वाणी आप्त है,
शाश्वत वाणी आप्त है

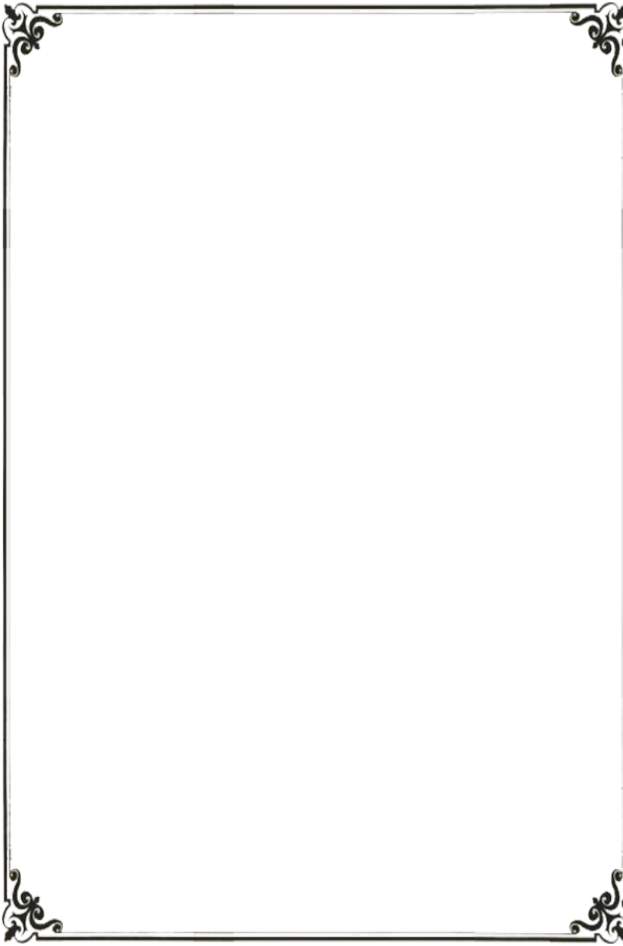

नायक - शाश्वत वाणी आप्त है,
हमें सहज ही प्राप्त है ।

समूह - हमें सहज ही प्राप्त है ,
हमें सहज ही प्राप्त है ।

नायक – हमें सहज ही प्राप्त है,
सह-अस्तित्व सुव्याप्त है ।

समूह - सह-अस्तित्व सुव्याप्त है ।
सह-अस्तित्व सुव्याप्त है ।

नायक - सह-अस्तित्व सुव्याप्त है ।
व्यापक सदा अमाप्य है ।

समूह - व्यापक सदा अमाप्य है ।
हाथी घोड़ा पालकी ॥
हाथी घोड़ा पालकी,
बात है जीवन सार की॥

9

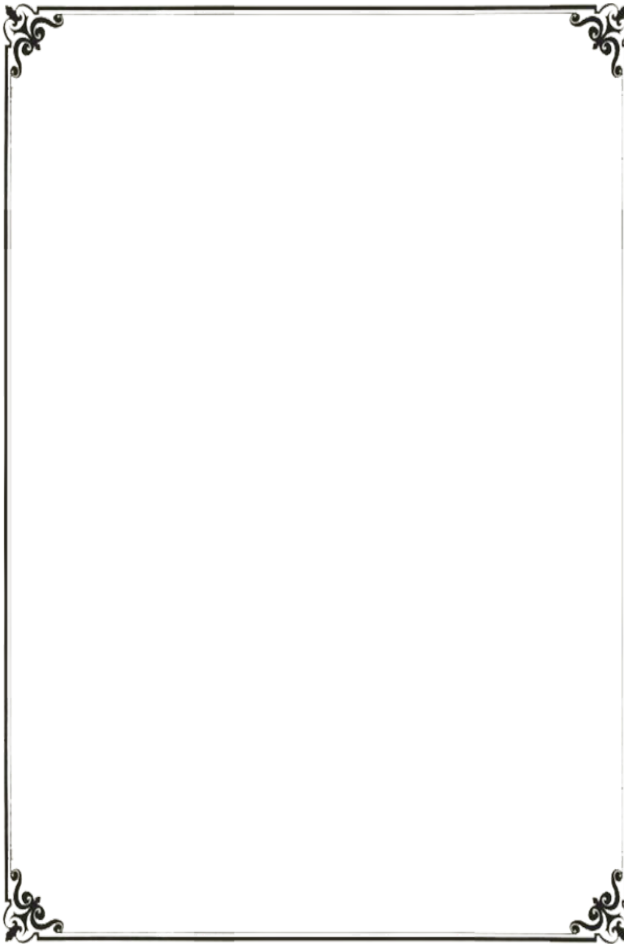

भय से कुछ ना मानेगें

नायक - बात है जीवन सार की
भय से कुछ ना मानेगें ।

समूह - भय से कुछ ना मानेगें,
भय से कुछ ना मानेगें ॥

नायक – भय से कुछ ना मानेगें,
जानेगें सो मानेगें,

समूह - जानेगें सो मानेगें,
जानेगें सो मानेगें,

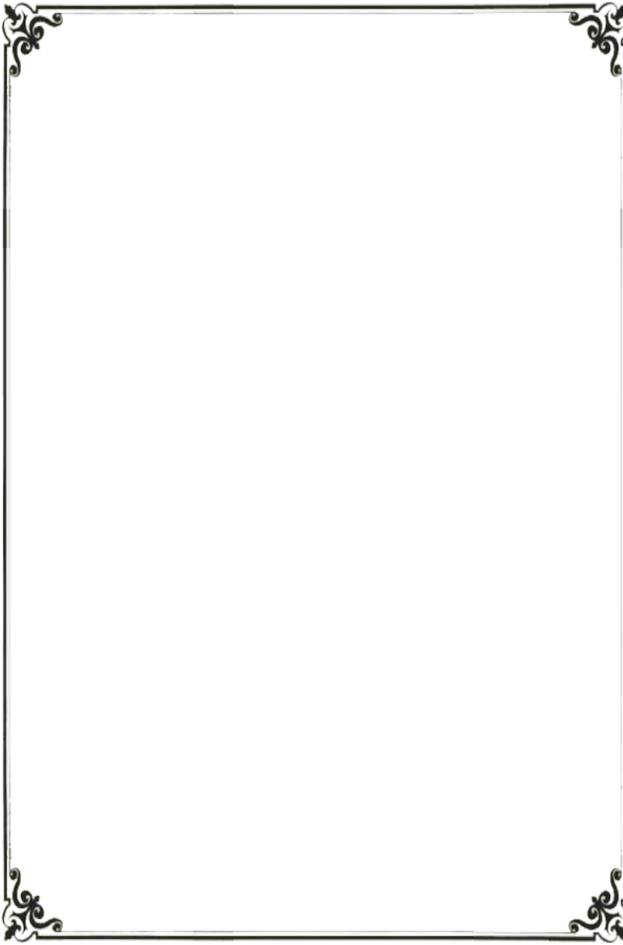

नायक - जानेगें सो मानेगें,
मानेगें सो जानेगें ।

समूह - मानेगें सो जानेगें,
मानेगें सो जानेगें ।

नायक - मानेगें सो जानेगें ।
जानेगें अपनायेगें ॥

समूह - जानेगें अपनायेगें,
जानेगें अपनायेगें ॥

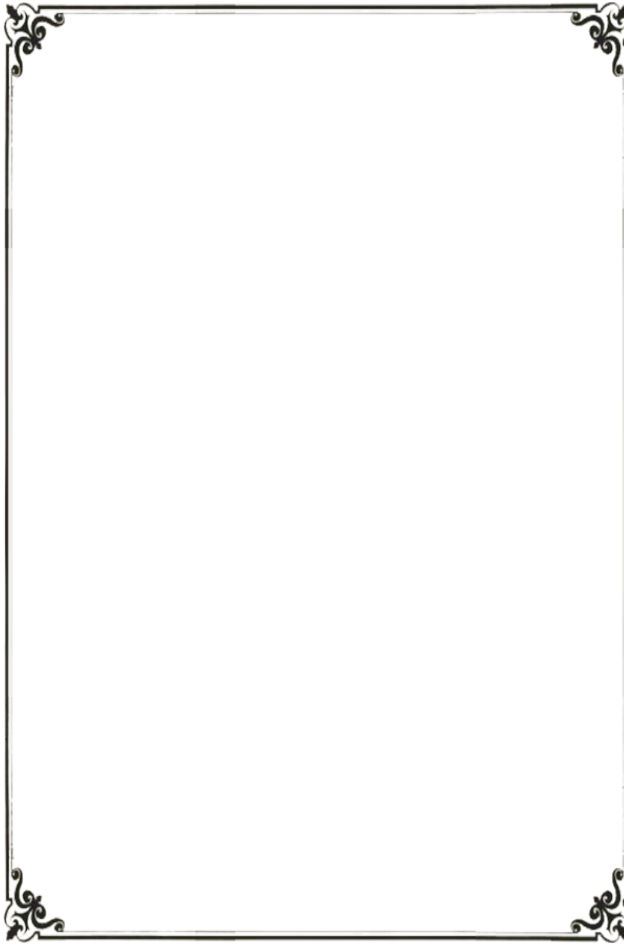

नायक - जानेगें अपनायेगें
जीवन में अपनायेगें ।

समूह - जीवन में अपनायेगें,
जीवन में अपनायेगें

नायक - जीवन में अपनायेगें,
सारे सुख हम पायेगें ॥

समूह - सारे सुख हम पायेगें,
सारे ही सुख पायेगें ।

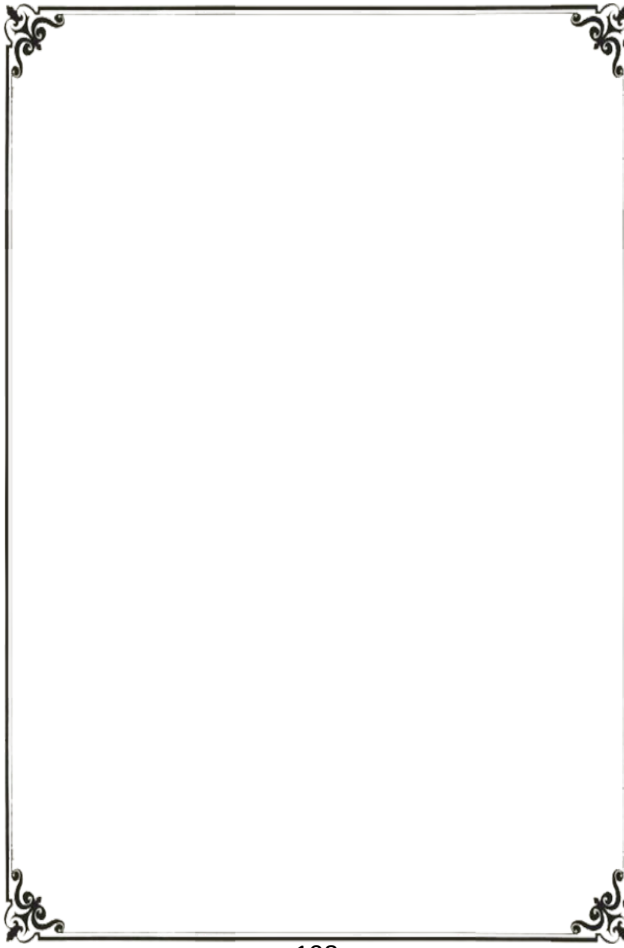

नायक - सारे ही सुख पायेगें
सबको सुखी बनायेगें ।

समूह - सबको सुखी बनायेगें
सबको सुखी बनायेगें ।

नायक - सबको सुखी बनायेगें
धरती हमीं बचायेगें ॥

समूह - धरती हमीं बचायेगें ,
धरती हमीं बचायेगें ॥

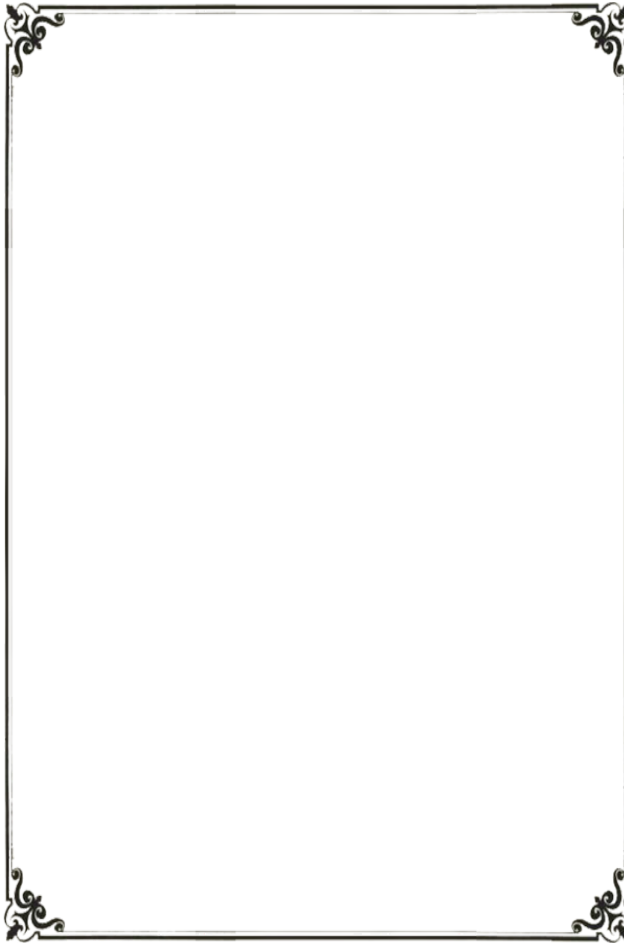

नायक - धरती हमीं बचायेगें ॥
पर्यावरण सुधारेगें ।

समूह - पर्यावरण सुधारेगें,
पर्यावरण सुधारेगें ।

नायक - पर्यावरण सुधारेगें ।
धरती स्वर्ग बनायेगें ॥

समूह - धरती स्वर्ग बनायेगें,
धरती स्वर्ग बनायेगें ॥

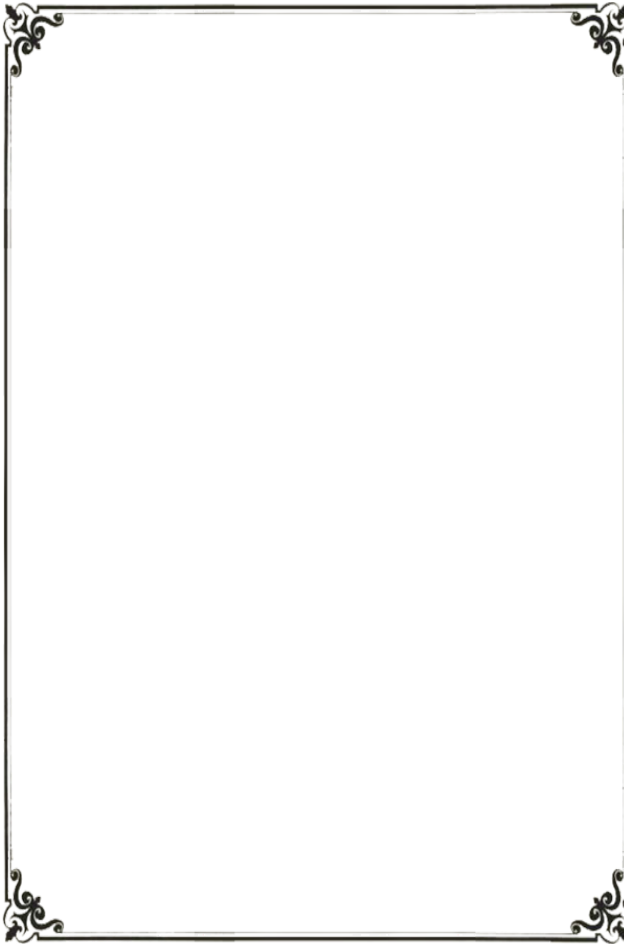

नायक - धरती स्वर्ग बनायेगें,
हाथी घोड़ा पालकी ।

समूह - हाथी घोड़ा पालकी,
बात है जीवन सार की॥
बात है जीवन सार की,
हाथी घोड़ा पालकी ॥ 10

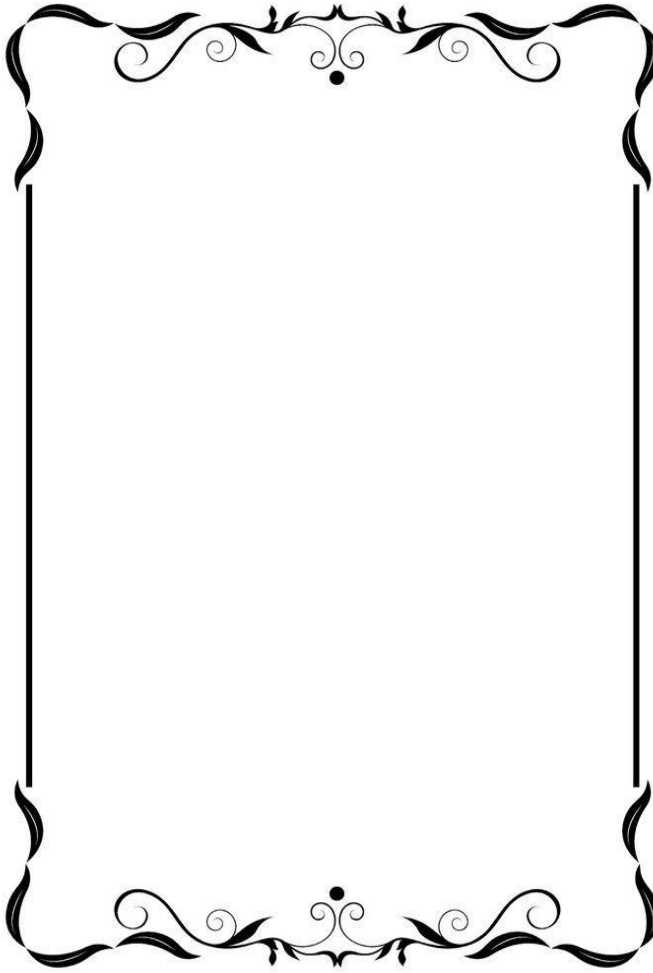

मैं आता हूँ

मैं आता हूँ, सुन लो घर में नये नजारे
लेकर ।
आँसू और मुस्कानअॅ में, उपहार सभी
हित लेकर ।
उपहार नये कुछ लेकर । १

पल-पल मेरे संग रहने का सुख
अनन्त-अलबेला ।
मुझको देखो, मुझसे सीखो, यह जीवन
इक खेला ।
है बड़े मजे का खेला । २

चिन्ता-पीड़ा-दुःख-समस्या, केवल
भ्रम की छाया ।

सुख ही सुख की सृष्टि है, भ्रम से
मानव भरमाया ।
तूने क्यअॅ नयन छलकाया ।३

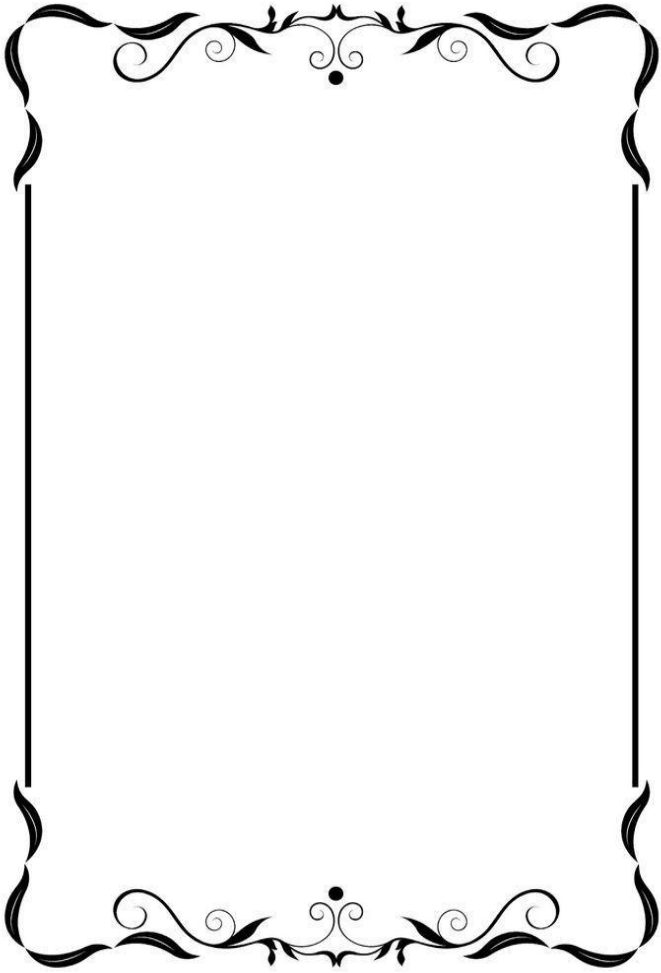

हर मानव की न्यायपूर्ण इच्छा पूरी होती है ।
न्याय समझ ले मानव, कोई कमी कहाँ टिकती है ?
माँ क्यअॅ व्यर्थ भटकती है ? ४

मैं सच का सौदाई, सहज में करता हूँ विश्वास ।
मेरी सहजता बिगड़ जाये, ऐसा मत करो प्रयास ।
जननी लो सच्चा विश्वास । ५

शिक्षा और संस्कार सिखाते, सारी झूठ की बातें ।

बच्चे का विश्वास तोड़कर, अपनी तरह
बनाते ।
सभी इक दूजे को भरमाते । ६

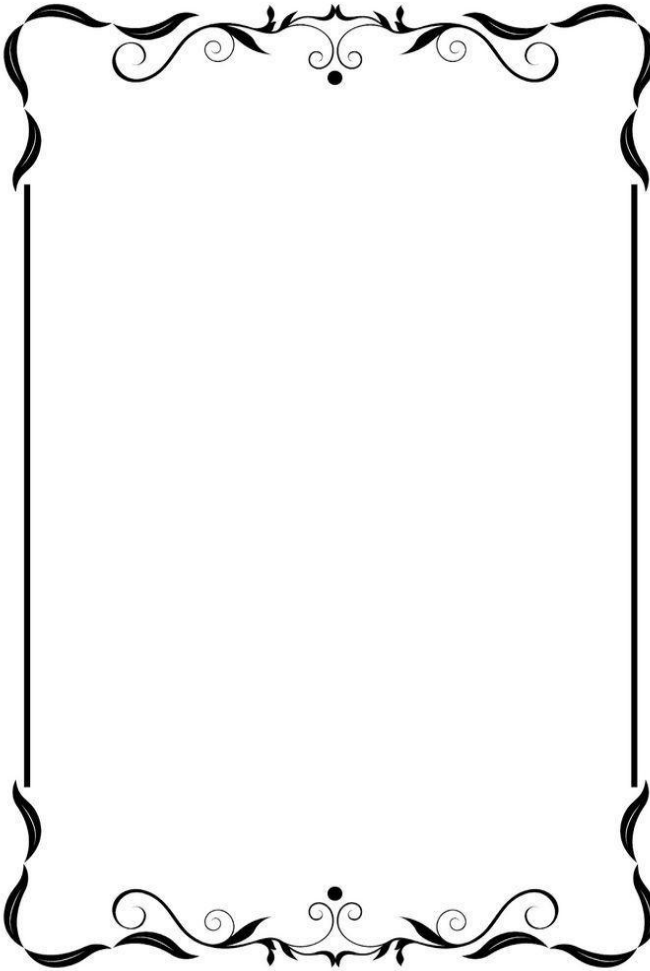

बिना ठगे जी सकते हैं,
समृद्धि-सुरक्षापूर्वक ।
न्यायपूर्ण व्यवहार-विचार-कार्य से
मिलता है सुख ।
सबके सुख में अपना सुख । ७

दादा बार-बार कहते, हर बार टालती
उनको ।
उनकी सेवा इसी तरह, हो सकती
समझो उनको ।
जननी मैं पसन्द हूँ उनको ।
माता वे पसन्द हैं मुझको । ८

मानने की कोई बात नहीं, सुनने की
बात है केवल ।

सुनकर समझ नहीं आये, तो पास बैठ
पूछो हल ।
माँ मौजूद समस्या का हल । ९

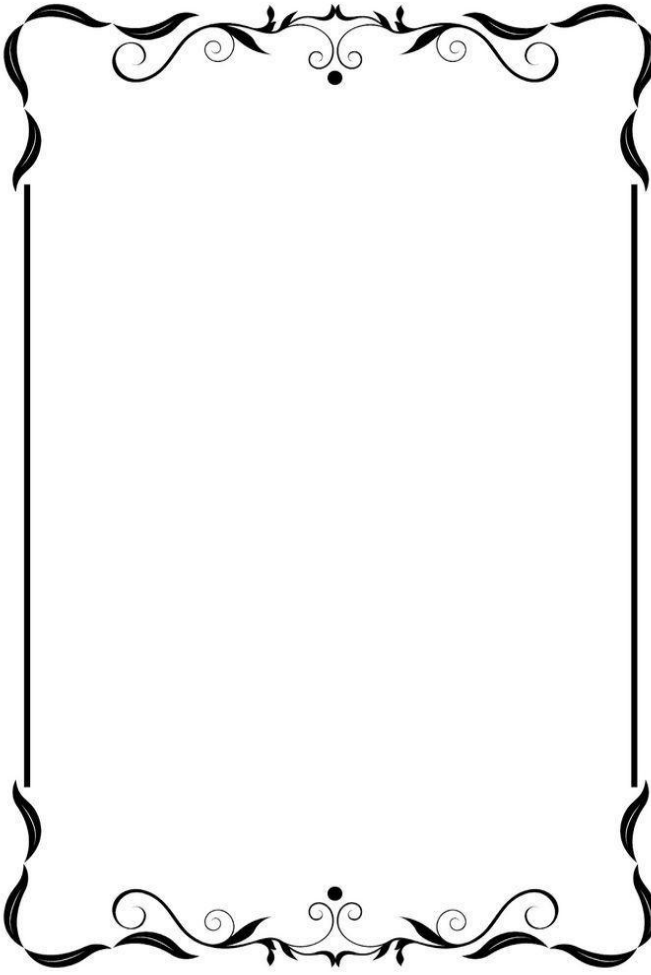

चौतरफा हैं खुशियाँ

तू आती है आज, हो रही
इन्तजार की खुशियाँ ।
लगता है रोमाञ्च मधुर,
मैं किससे बाँटूं खुशियाँ॥

ऐसी क्या है बात,
सभी के पोते-पोती होते ।
जानूँ ना मुझको ही क्यअँ,
होती है तुमसे खुशियाँ ?

माना तुम सुन्दर हो,
मुस्कानें मनवा हर लेती ।
शैशव की पहचान यही,
लौटाये सबको खुशियाँ॥

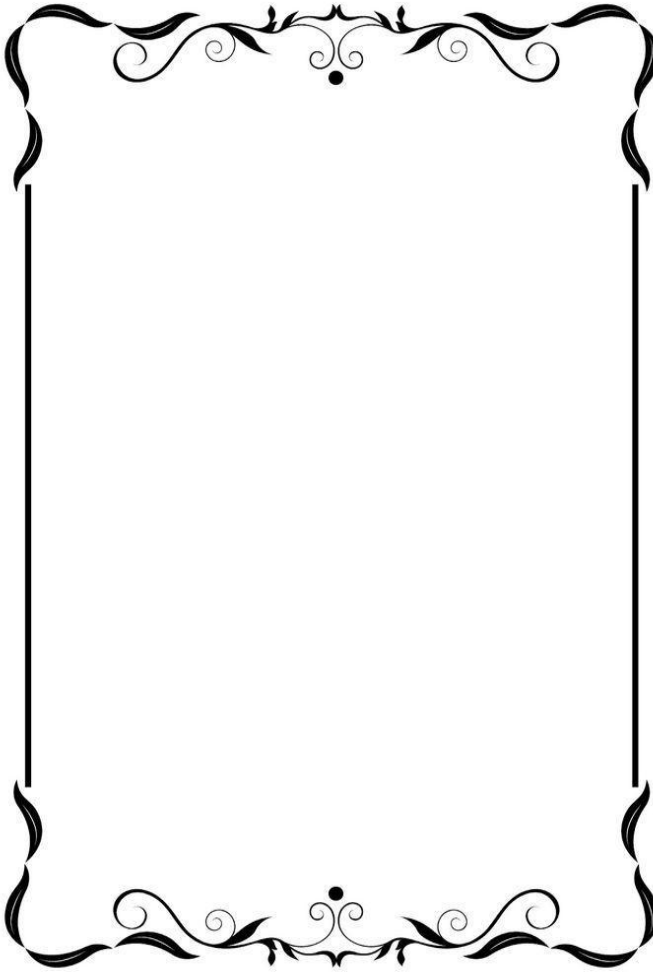

कितना व्यस्त हो गया मानव,
है उसका दुर्भाग्य ।
वञ्चित ही रह जाता,
ना दिखती अनमोल ये खुशियाँ ।

यही कामना करता हूँ,
सब ही पा जायें हरदम ।
शिशु सारे अनमोल,
बिखेरे चौतरफा ये खुशियाँ ॥

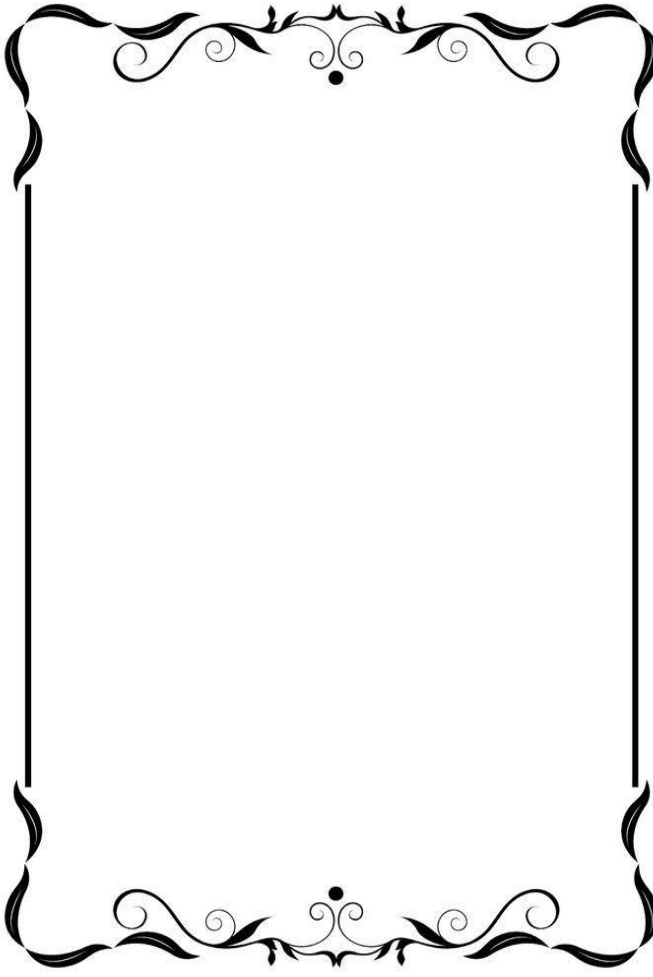

याद तुम्हारी मन में

पौने पाँच बजे जागा, झट याद तुम्हारी मन में ।
मुस्कानें देखी तेरी, मुस्काया मन ही मन में॥

शौच-स्नान फिर प्राणायाम, तब बाल-सूर्य के दर्शन।
तेरी दुधिया मुस्कानअॅ का, चित्र छा गया मन में॥

इतने में आ गई चाय, थिन अरारोट के साथ।
यात्रा में आनन्द अनोखा, स्मरण तुम्हारा मन में॥

सहयात्री परिवार अनोखा, हिन्दी-बाँग्ला
–भाषी ।
मामा दास- भांजा शर्मा, माया प्रेम की
मन में॥

जाति-प्रान्त-मत-पंथ-भेद सब,
देह-भाव-विस्तार ।
जानो जीवन क्रिया टपु, है सुख ही
सुख जीवन में ।

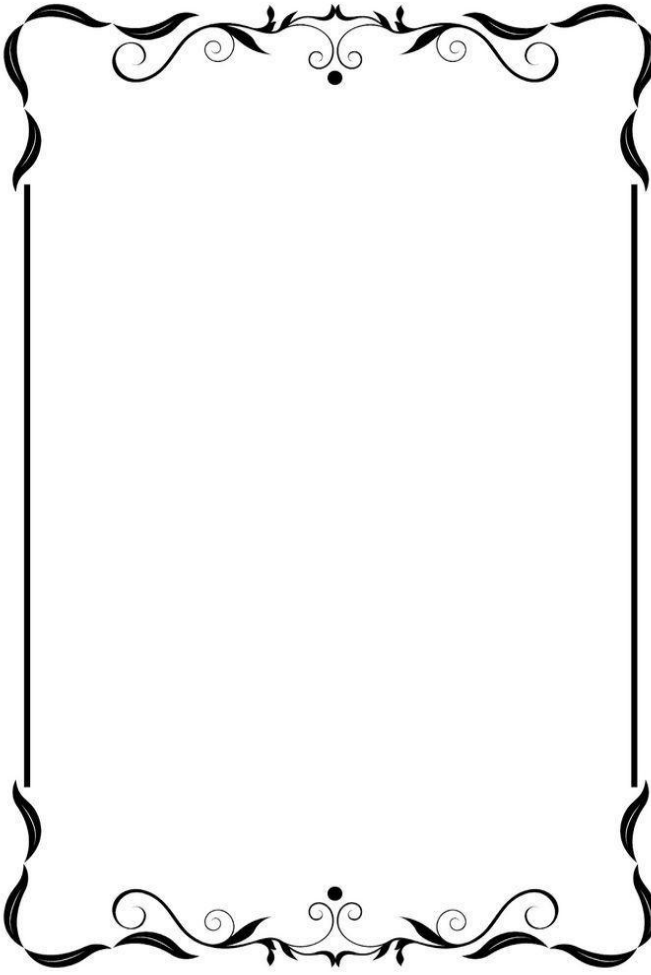

गुड़िया

तीजा हो या चौथा, मुझको याद न आता
गुड़िया ।
तेरे बिन जो भी बीता दिन, व्यर्थ मानता
गुड़िया ।

घर से बाहर मैं ना निकलूँ, टीवी देखूँ
कितना ।
गोदी में ना खिला सकूँ, क्या करुँ मैं
इसका गुड़िया?

पापा जब परदेश तो मम्मा पीहर ही
जाती है ।
मनवा टूटे तेरी खातिर, क्या कर
सकता गुड़िया ?

कविताओं से जी ना भरता, उपन्न्यास
है अधूरा ।
मझली-प्रकरण मन का मन्थन करता
गुड़िया ।

कल अच्छा लिख पाया, पत्रिका की
खातिर ।
तूने ना देखा तो उसमें जान कहाँ है
गुड़िया ?

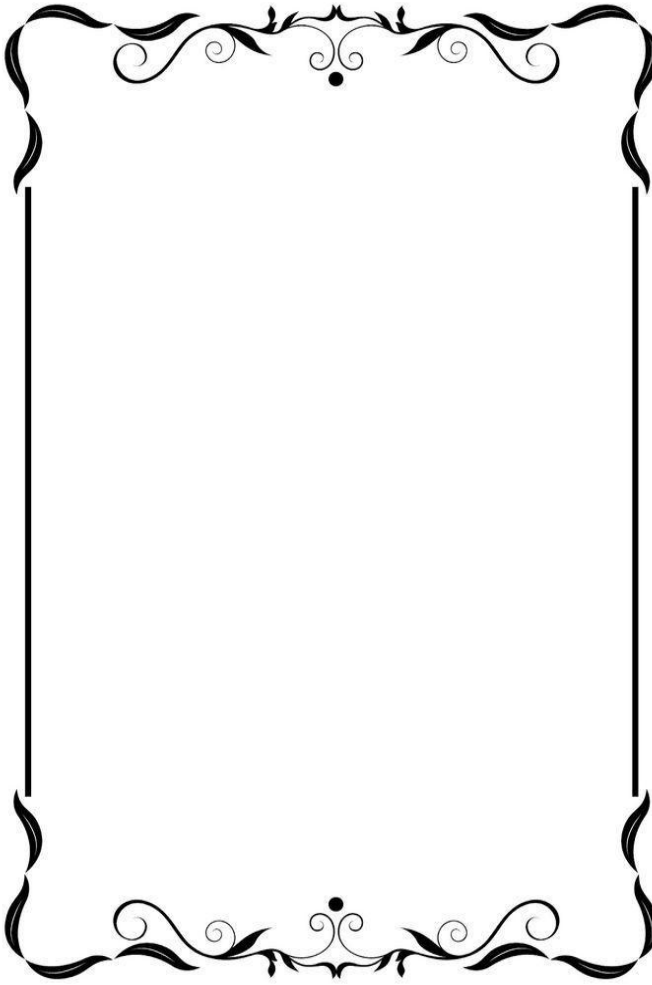

मरु-माटी की याद

बूँद-बूँद पानी की कीमत, तुम कैसे जानोगी?
मरु-मायड़ ना देखा, कैसे खुद को पहचानोगी?1

परम्परा से पुरखे अपने, धोरअँ में ही जिये हैं ।
सर्दी, गर्मी, बारिश के सुख, पीड़ा द्वन्द्व सहते हैं ।2

अपनेपन की गंध बसी, कण-कण में आकर जानो ।
इसकी झन-झन लोरी मीठी सहलाती पहचानो ।3

बड़े दिनअॅ से बिछड़े दादा, जब इतने
बेजार ।
मरु-माटी की विरह-वेदना सोच के देखो
यार ।4

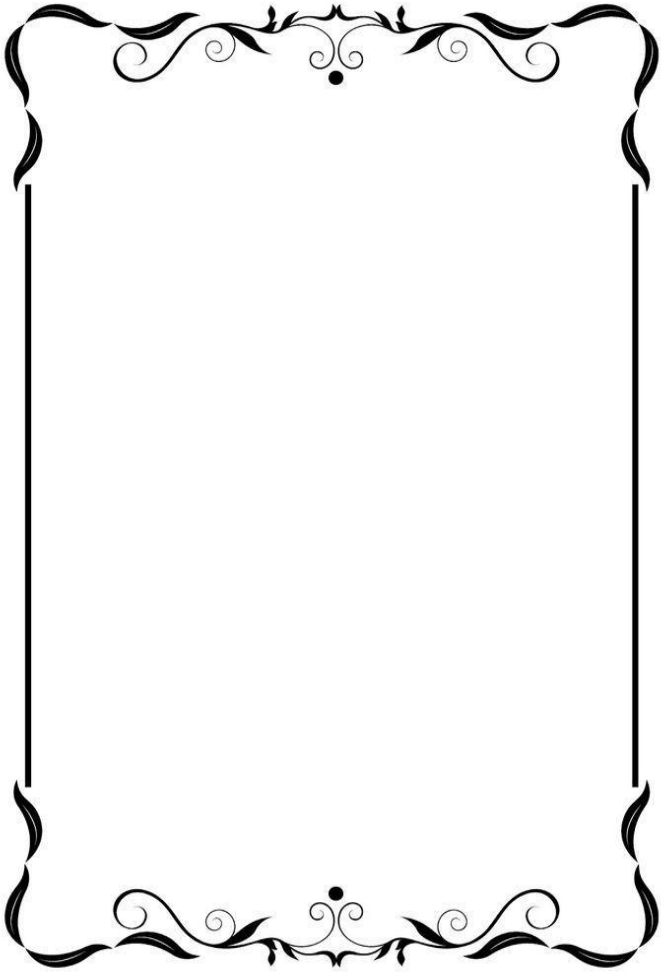

तेरे दादा की दादी कितनी खुश हो
जायेगी ।
आँगन नाचेगा तस्वीर से बाहर खुद
आयेगी ।5

तेरे पापा के दादा भी राह निहारे टप्पु ।
एक बरस की हुई ना अब तक निज घर
देखा टप्पु ।6

बिना प्रयोजन साँसअँ का सिलसिला
वहाँ का छोड़ो ।
सही प्रयोजन जानो, जीवन की धारा
को मोड़ो ।7

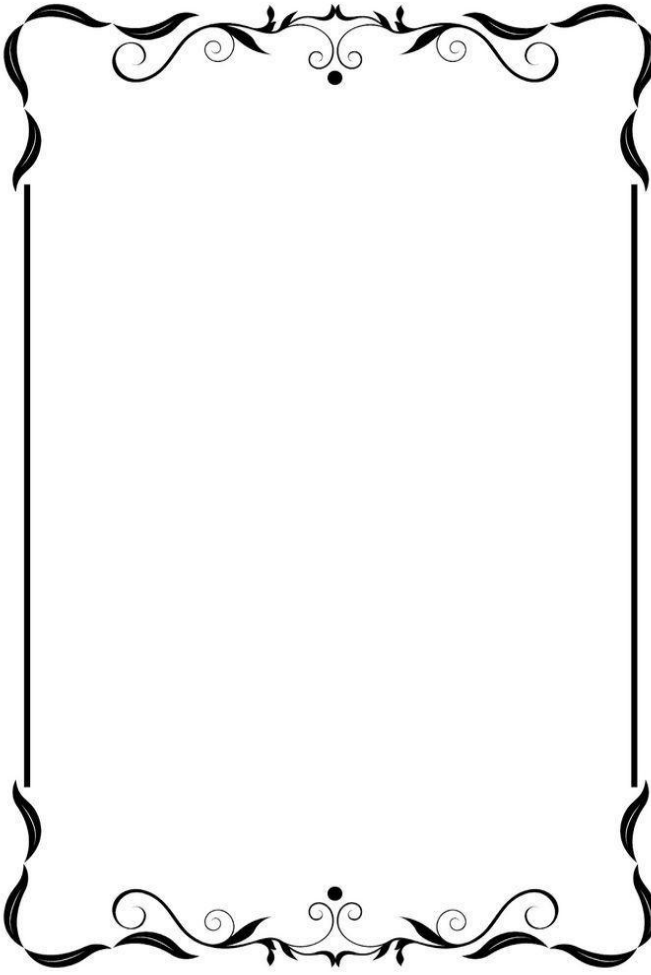

पानी रे पानी

कहने को बस पानी है, इसकी ना कोई सानी है ।
जीवन का आधार है ये,आनन्दअॅ की तो रानी है ।

सूरज से तपकर उठता,बादल बनकर छा जाता ।
पर्वत से टकराकर फिर, टप-टप बरसे पानी है ।

नदियअॅ और तालाबअॅ में, कुओं, टंकी, और नालअॅ में ।
झरनअॅ, झीलअॅ, गढअॅ में,
छल-छल-छलके यह पानी है ।

धरती के भण्डारअॅ से, मानव उलीचता पम्पअॅ से ।
छत की टंकी से होकर,नल से टपके यह पानी है ।

बूँद-बूँद अनमोल है ये,व्यर्थ न करना
अमृत को ।
पशु-पक्षी और पेड़ॲ को भी, जीवन देता
पानी है ।

जीवन यदि बचाना है, और खुद को सुखी
बनाना है ।
धरती स्वर्ग बनानी है तो बचा के रखना
पानी है ।

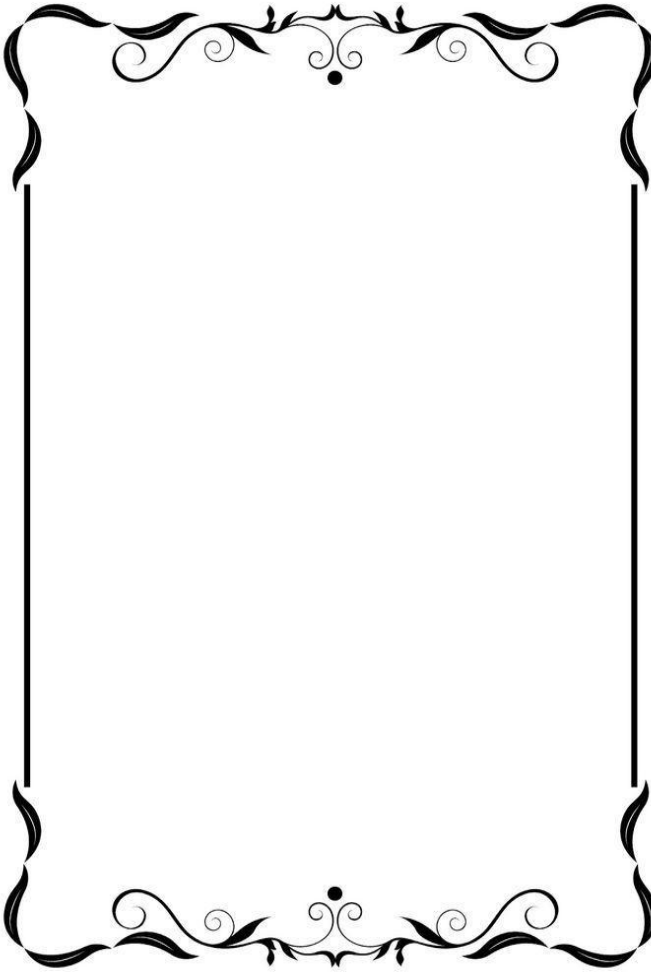

रिमझिम वर्षा

बरसा पहले खूब झमाझम, अब
रिमझिम बौछार.
तेरे स्वागत के हित यह अनुपम,
प्राकृतिक उपहार.

यह बारिश भावी गर्मी की सूचना देने
आई.
संभल जाईये, अब होनी है, लुएं तेज
हजार.

गौ-वत्स को छत के नीचे बांधा, पर
मुश्किल से.
अपनी माँ को छोड़ के आना, किसको
हो स्वीकार?

तीन दिनअॅ मैं व्यस्त रहा, तेरे हित बैठ
न पाया.
तेरे ही स्वागत में, तुझ पर कविता कर
ना पाया

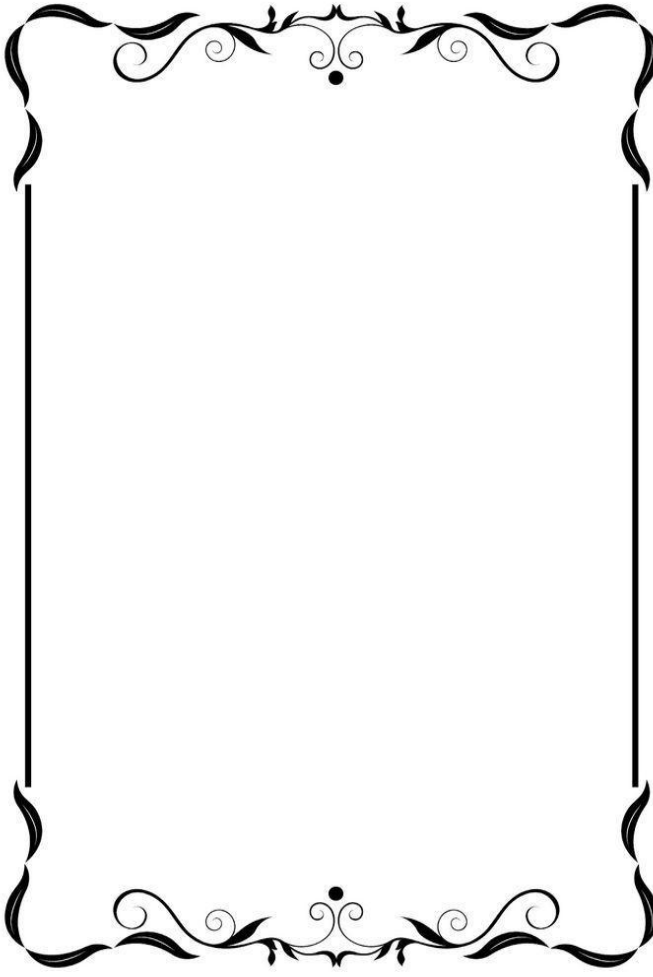

प्रतिबिम्बन

कल जो लिखा मैंने, है पुनः वो पाया ।
भाव समझदारी का तेरे चेहरे पर है छाया
।

शैशव,बचपन,यौवन सारे देह पे
आते-जाते ।
जीवन देह चलाता, समय से ऊपर
जीवन पाया ।

जितनी देर सामने होती, तुम्हें निहारा
करता ।
लिखना-पढ़ना-रचना करना, मुझ से
सभी भुलाया ।

बेहतर है तुम अधिक समय, तक रहती
बन्द कमरे में ।

करूँ याद वे पल संगत के, तब कविता
कर पाया ।

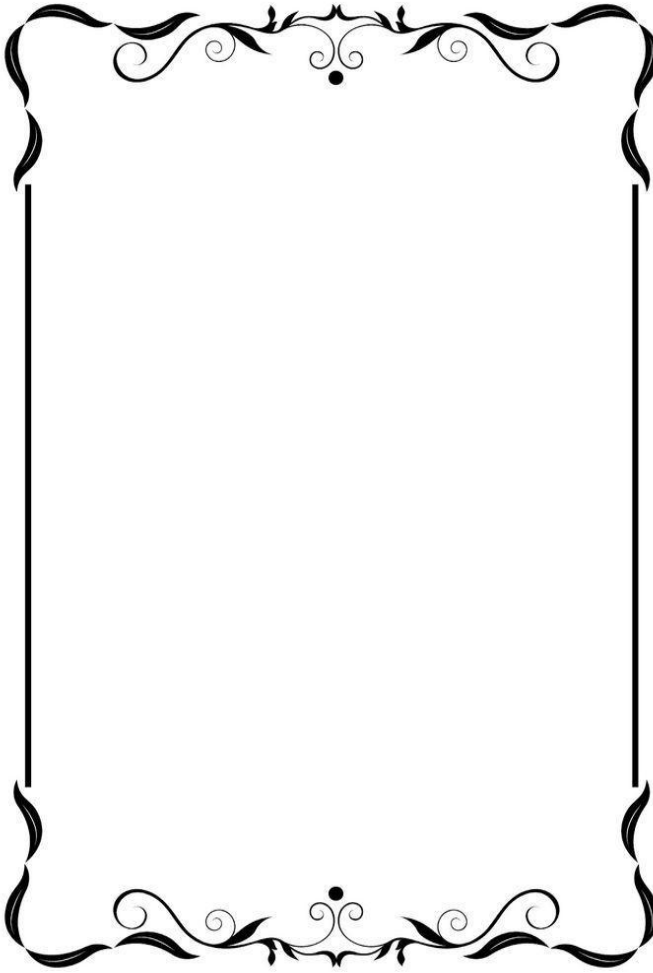

अध्ययन निरंतर क्रम से

क्रिया करुँ तो सुख मिलता है, पीड़ा
प्रतिक्रिया से ।
जान सका हूँ मैं टप्पु, पल-पल
अध्ययन-क्रिया से ।

रहा साल भर तेरे संग, हर गतिविधियाँ
भी देखी ।
मुस्काना-रोना-हँसना, और उत्सुकता भी
देखी ।
तन की भिन्न क्रियायें,भूख-प्यास-नित
बढना इसका ।
तू भी देखे विकास-क्रम,
प्राणावस्था-यूनिट का ।
कहते हैं बच्चा भगवान, बचता है
प्रतिक्रिया से ।
मासूमियत की पदवी भी मिलती मासूम
क्रिया से । 1

पदार्थ से ज्ञानावस्था, सब इकाईयाँ हैं
साधन ।
मानव सबको जाने, जिज्ञासा नैसर्गिक
बन्धन ।
तेरी जिज्ञासायें सबको चकित करे सुख
बाँटे ।
यही सीख मिलती तुमसे, सारे बस
खुशियाँ बाँटे ।
सीख भुलाकर मानव उलझा निज-निर्मित
दुःखअॅ से
जान सका हूँ धृति तुम्हारे संग
अध्ययन-क्रिया से । 2

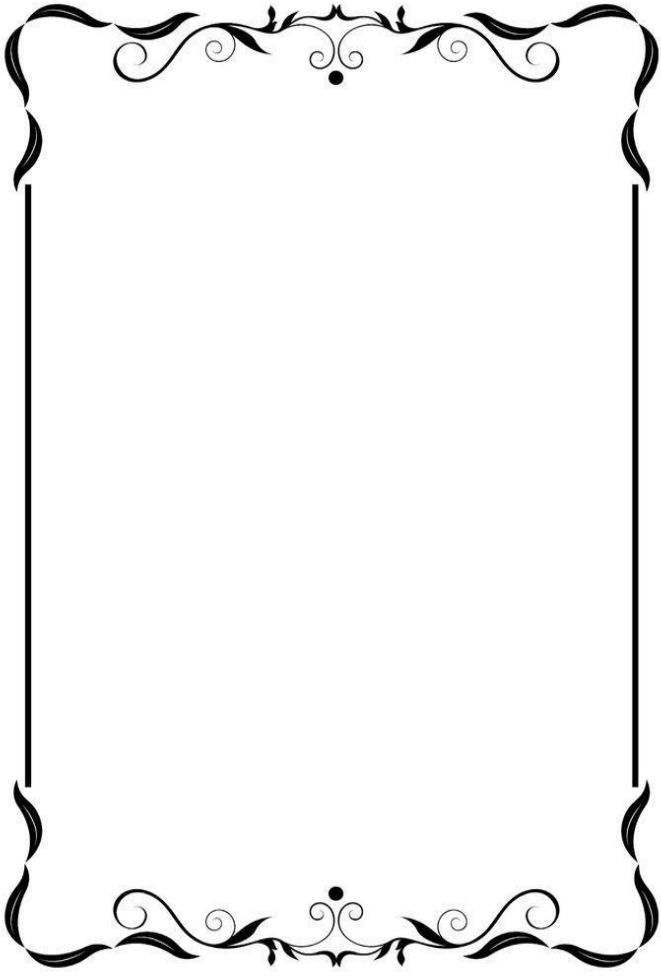

यहाँ लाडनूँ में भी जितनी देर कर्म-रत
रहता ।
बगिया अथवा लेपटोप पर, रचना-क्रम
सुख देता ।
नई-नई बातें सिखलाती प्रकृति लाख
दिशा से ।
राज खोलता खुशी-खुशी व्यापक हर एक
दिशा से ।
कण-कण देता भान उसी का, टिका
उसी सत्ता से ।
जान सका हूँ मैं गुड़िया पल-पल
अध्ययन-क्रिया से ।3

प्रतिक्रिया से बचने की यह सरल
व्यवस्था जानी ।
न्यायपूर्वक आशा-विचार-इच्छाएँ पहचानी
।

कोलकाता अन्याय का अड्डा, लाडनूँ
न्याय बचा है ।
उसी लीक को बड़ा करुँ, इतना ही कार्य
बचा है ।
इन्तजार करता परिजन का, जीना संग
खुशी से ।
जान सका मध्यस्थ-क्रिया-अध्ययन
निरन्तर क्रम से ।4

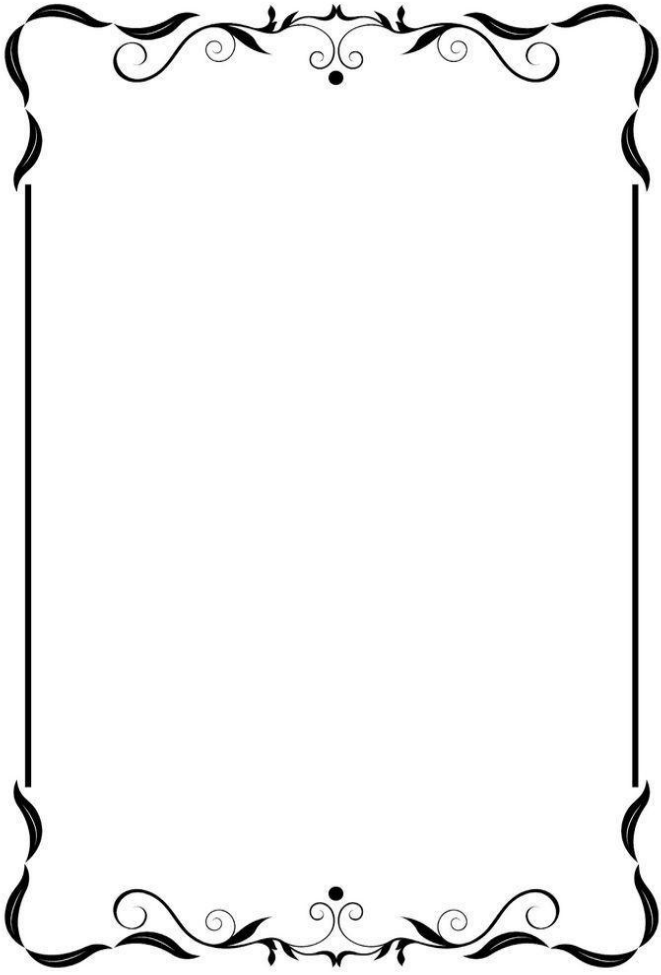

तन-मन हर्षित मेरा

फिर प्रातः फिर से मस्ती,मन
उछल-मचल के नाचे ।
याद टपु की करता, घोड़ा-ऊँट बना सा
नाचे ।
चार से सात बजे तक, काम से तन-मन
हर्षित मेरा ।
मन्दिर का संगीत-शोर सुन, हास्य-भाव
से नाचे ।
किया नाश्ता, आ बैठा हूँ, कविता तुमको
लिखता ।
दादी के संग बात हुई, तू 'पापा' बोल के
नाचे ।
अब बोलो दादी-बुआ, फिर है दादा की
बारी ।

तेरी मीठी बतिया सुनूँगा, सोच के दादा
नाचे ।

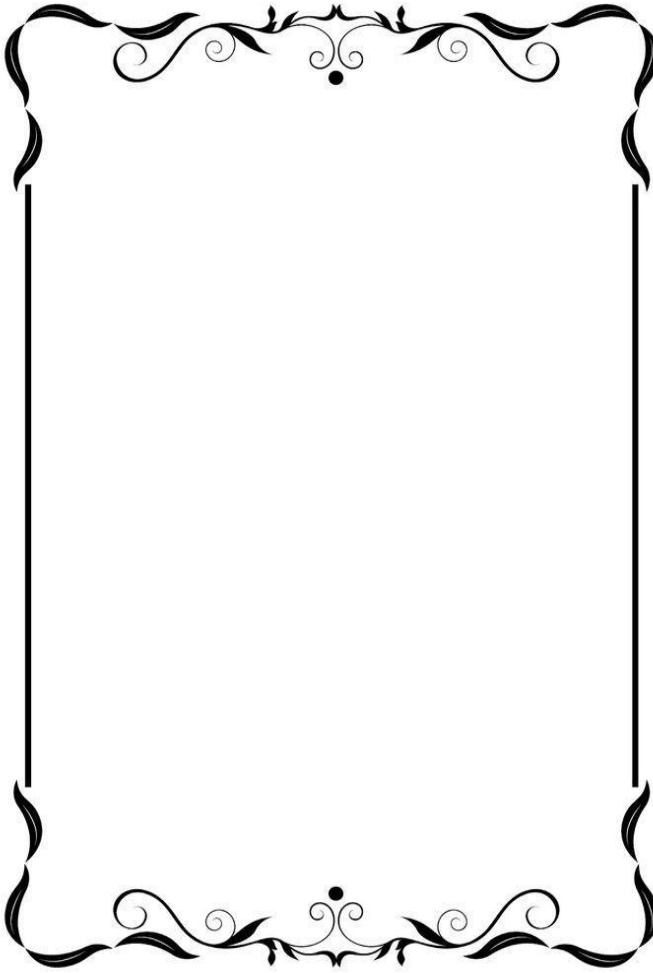

वह दुधिया मुस्कान

प्रकृति-रंग सुहाने, मानव-निर्मित सब बदरंग ।
पेपर पढकर हो जाता, मस्ती के रंग में भंग ।

इधर खिल रहे फूल, चले मद्धम-भीनी सी बयार ।
कोमलता किरणअॅ की पाकर खिले फूल का रंग ।

जल की बूदें वनस्पति के प्राण हरे कर देती ।
झाड़ू से उड़ते कण बनते किरणअॅ के हमरंग ।

हर इन्द्रिय प्रफुल्लित, मन का राग
अनन्दी ।
खबर-नवीसी उल्लू है, देखे केवल
बद-रंग ।

धृति की याद जरूरी, पेपर पढना बन्द
करुँगा ।
वह दुधिया मुस्कान, चाल की रुन-झुन,
बजते चंग ।

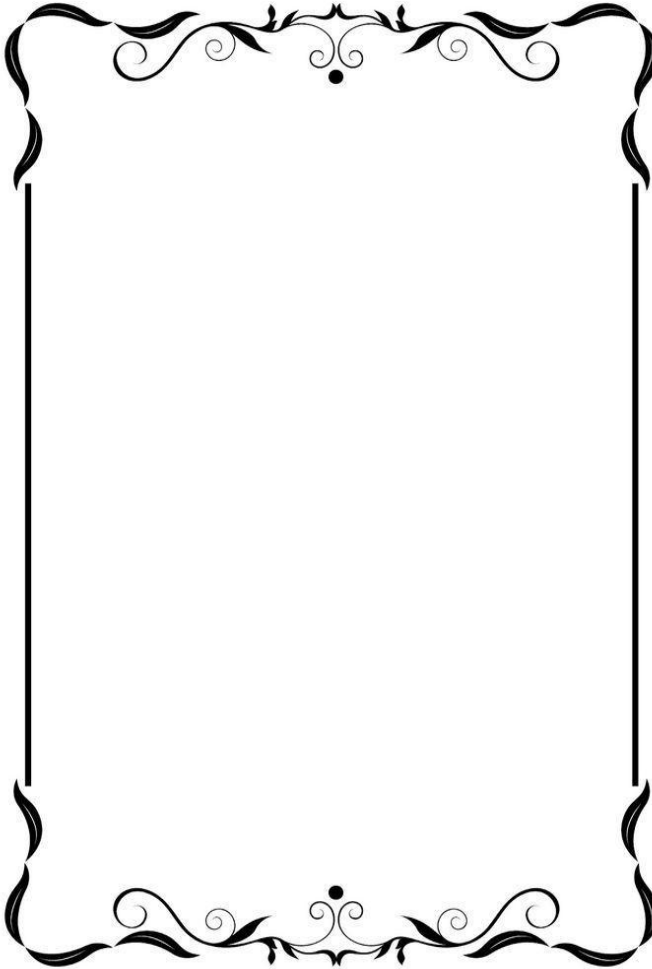

मन कंटकमय मेरा

विश्लेषण,लेखन,अखबारॲ तक मेरा
जीना है ।
तेरे पास नहीं हूँ गुड़िया, बस भ्रम का
जीना है ।

बाहर खिलते फूल, बना मन तो
कंटकमय मेरा ।
बाहर-भीतर द्वन्द्व चले, बस ऐसा ही
जीना है ।

गुण या दोष दूसरॲ के तो, देख रहा हूँ
निरन्तर ।
अपने दोष आड़ में रखता, दोहरा यह
जीना है ।

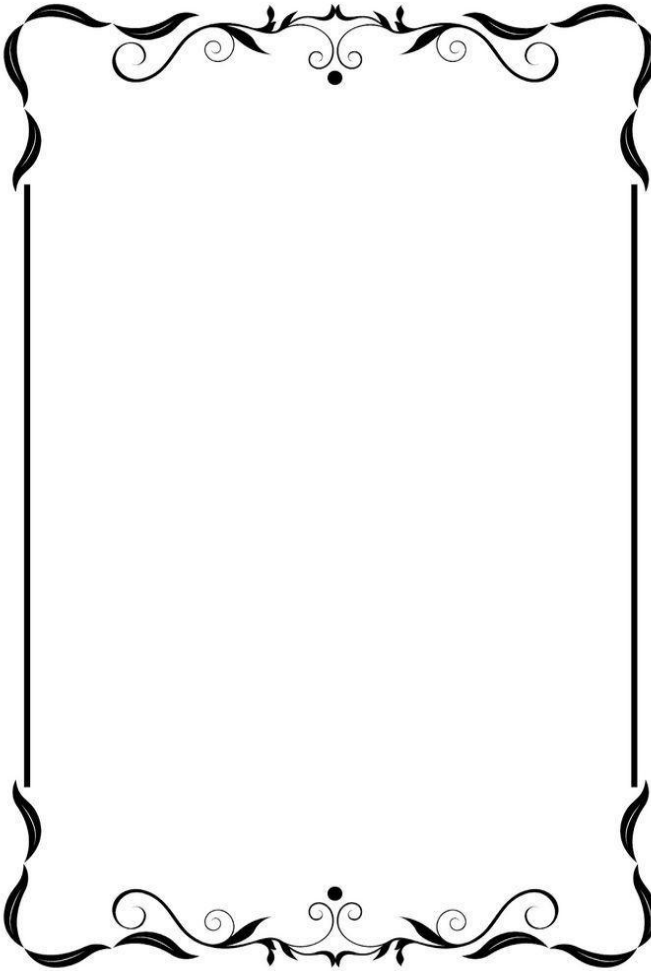

जैसा जिया-विचारा वैसा, बना लिया संसार ।
अब चाहत है सही बनाओ,तुम मेरा जीना है ।

सोच न पाऊँ पूरा, सोचा हुआ नहीं कर पाता ।
जितना किया भोग ना पाता, भावी में जीना है ?

देख न पाता खुद को, तुम नित मुझे जाँचती सच्चा ।
साथ ही धृति-मय हो पाऊँ, तो सच्चा जीना है ।

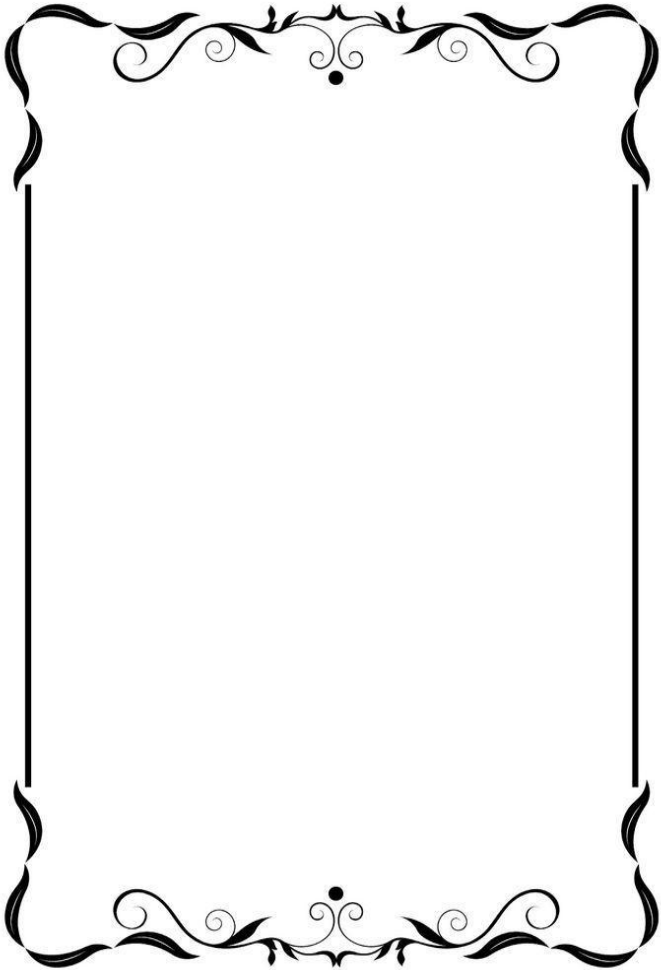

सरल-राजमार्ग

पेपर से मन पीड़ित-आहत, गया फूल
के पास ।
धृति की दुधिया मुस्कानें, फिर आई मन
को रास ।
फिर देखी नयनअॅ की रौनक, लगा
बोलना चाहे ।
कान लगाकर सुनने की करनी है
कोशिश खास ।

ले बयार का संग, सरसराते पत्तअॅ के
स्वर में ।
'धृति' की मद्धिम तान सुनी, फूटा
होठअॅ पर हास ।
नयन बन्द हो गये स्वयँ, भीतर हलचल
मचती है ।
सृष्टि-क्रम आश्वस्त करे, दिखता
जागृति-विकास ।

भ्रम में मानव सभी दिशा से, तोड़-फोड़ करता है ।
अपने शुभ का घात, योजनापूर्वक करता ह्रास ।
भ्रम छूटे तो देव बने, जाने-माने निज धर्म ।
दानवता से मानवता, फिर देव-स्वर्ग में वास ।
सहज-सरल सा राजमार्ग, पग-पग पर दे आनन्द ।
खेल 'धृति' का जाना, करती बाबा से परिहास ।

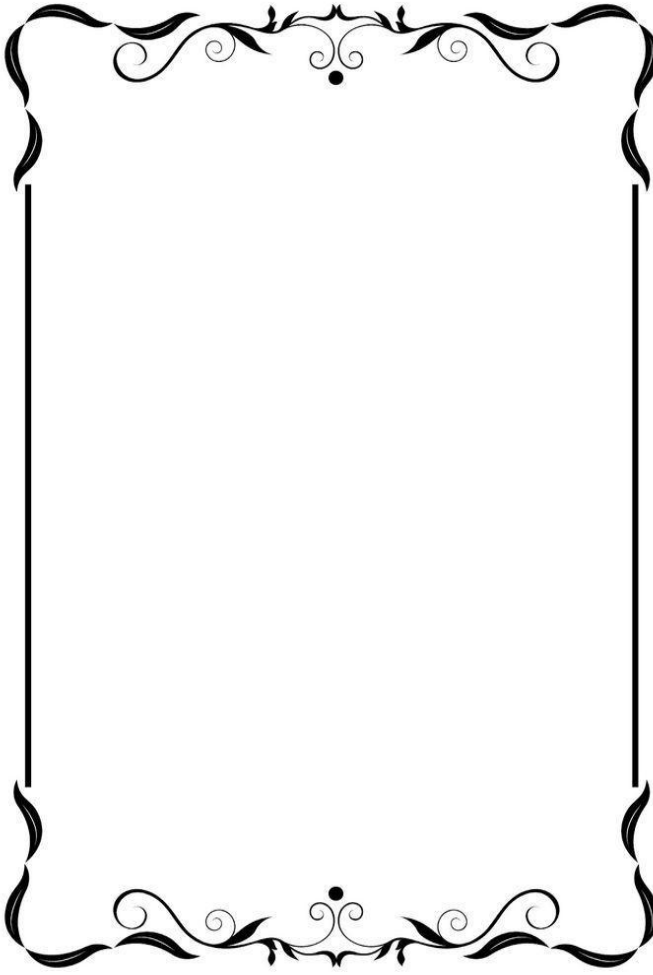

सुनो 'धृति' का कहना

चार बजे बिस्तर छूटे तो, काल को गले
लगा लो ।
कालग्रस्त हअॅ बाकी मानव, मन में ध्यान
लगा लो ।

काल हमारे वश में है, जो आज का काम
अभी हो ।
कल पर टालना दीर्घसूत्रता, मन को अब
समझा लो ।

प्रातः वातावरण में देखो, अमृत झरता
प्रतिपल ।
तन-मन-प्राणअॅ का संजीवन, ब्रह्म-चर्य
अपना लो ।

एक-तानता सहज सधे, चंचलता लेश न
बनती ।

कार्य-सधे सत्वर-उत्तम, खुद जानो और
अपना लो ।

‘धृति’ करती तत्काल, न अगले पल पर
टालना जाने ।
सुनो ‘धृति’ का कहना साधक,खुद का
काम बना लो ।

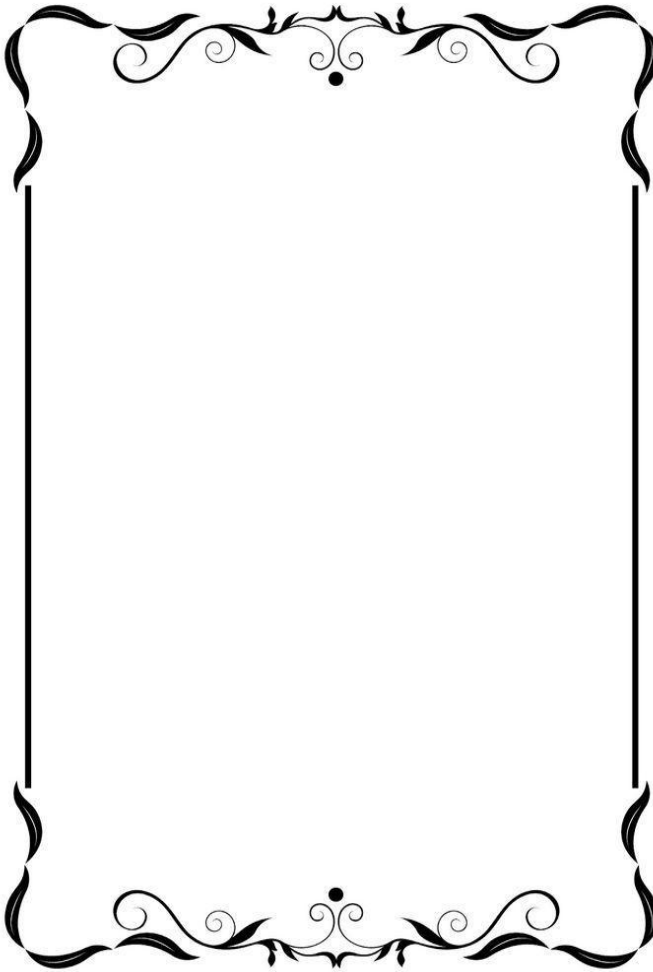

मानव सीखेगा मानव से

रात दो बजे सोकर प्रातः पाँच बजे
जागा हूँ ।
तन-मन में श्लथता, कमजोरी, बेरुचि
पाता हूँ ।

समयबद्धता स्वास्थ्य बनाये,व्यतिक्रम
करे निढाल ।
अपने पर जो होता, वैसा तुमको कह
पाता हूँ ।

किताब अथवा सुना-सुनाया, बहुत काम
ना आये ।
जीवन नया पाठ नित देता, खुद को
समझाता हूँ ।

मानव सीखेगा मानव से, समीकरण
सीधा है ।
'धृति' को उच्च मानवी तल पर,
लगातार पाता हूँ ।

धृति-रूप में साथ मेरे जीने का लक्ष्य
बनाकर ।
आती है अर्चना-नन्दिनी, मन कृतज्ञ
पाता हूँ ।

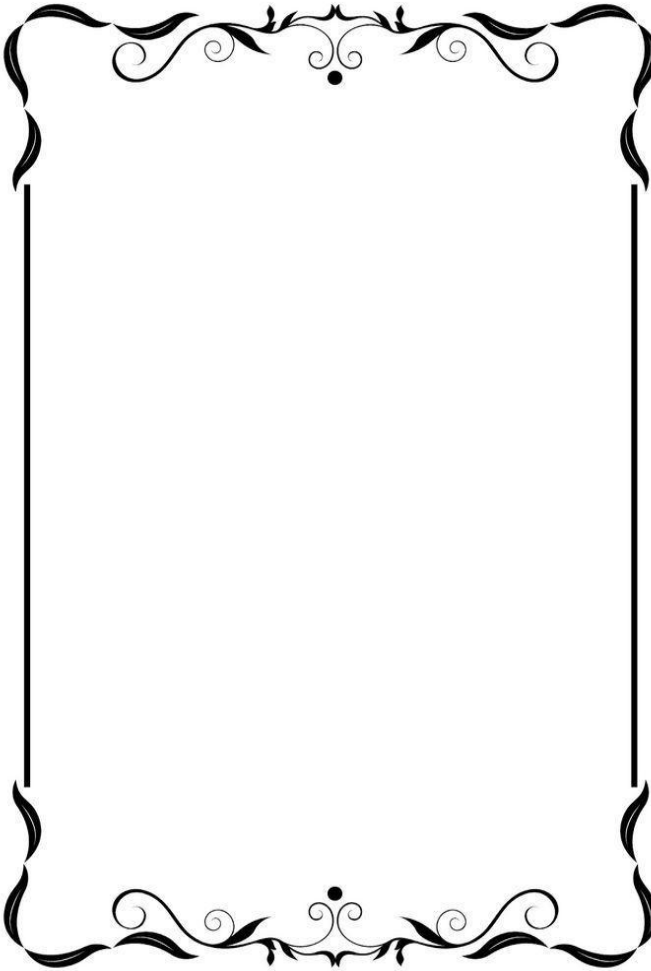

संगच्छध्वं

एक मिली आधी लेकिन, दो धृतियाँ पाई पूरी ।
आधी पूरा होना चाहे, सृष्टि-गत तैयारी ।

नियम जानकर आनन्दअॅ की यात्रा सुखद बनी है ।
चरैवेति का स्वर अन्तरतम बना रहा आभारी ।

सृष्टि-श्रेया पूरे मन से, सीता अधर में झूले ।
भूप-ईश बच्चा बनने की करता है तैयारी ।

सहयात्री उत्तम मेरे, 'संगच्छध्वं' अब
सार्थक ।
स्वाध्याय-पूर्वक पल-क्षण जीने की मेरी
बारी ।

'धृति-शोध-संस्थान' ने पाया अपना
सही प्रयोजन ।
चार अवस्था सहयोगी, जागृति-योजना
सारी ।

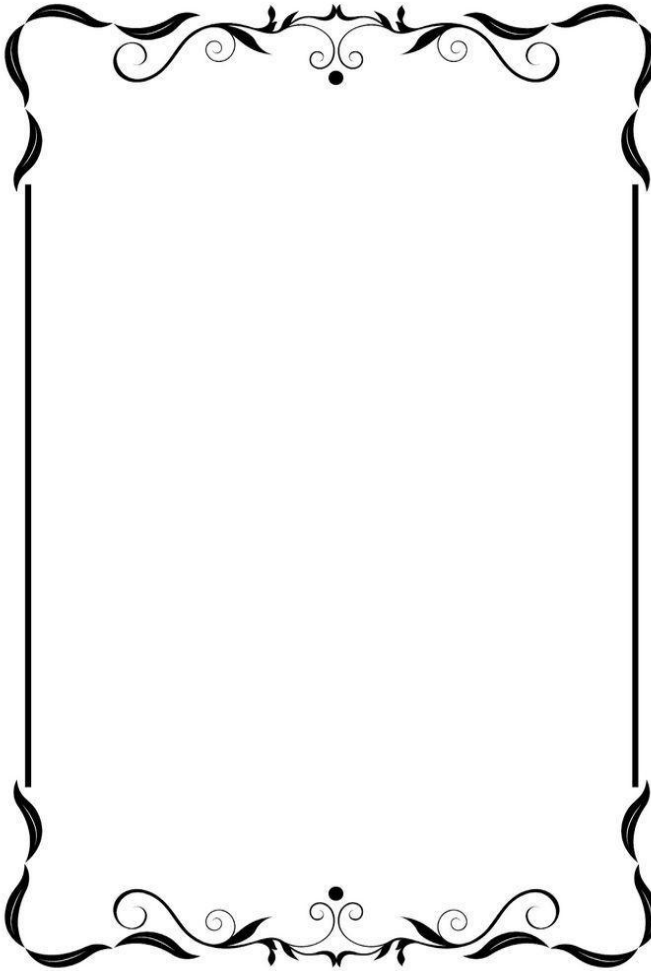

संकल्प- संबल

वे जैसे जीते हैं जियें, मैं अपनी तरह जीऊँगा ।
एक ही छत के नीचे, स्व-छ्न्दता-मार्ग गहूँगा । 1 ।

वे स्वतन्त्र, मैं भी स्वतन्त्र, क्यअॅ उनकी बाधा मानूँ ?
हक है मेरा, घर है मेरा, क्यअॅ मैं उन्हें सहूँगा ।2 ।

निज विचार ही आत्म-परिचय,वहीं से देखूँ दुनियाँ ।
रंग-रंगीली, इन्द्रधनुषी,सबका आनन्द भी लूँगा ।3 ।

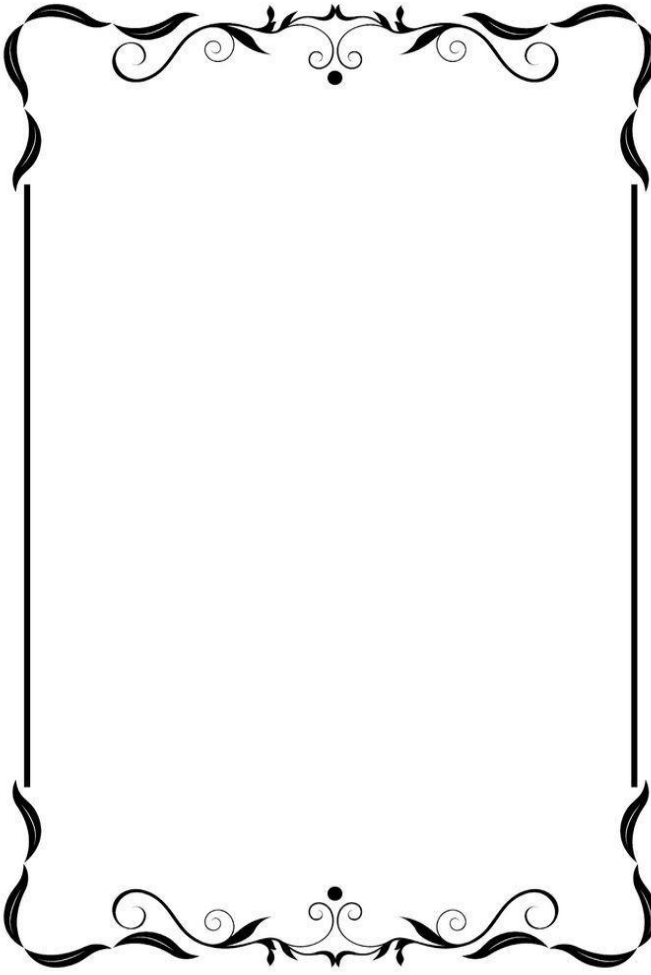

सजी दूकानें गुरुओं-पन्थअॅ,
शाला-सत्ताओं की ।
प्रिय-हित-लाभ-दृष्टिपूर्वक,मन-मर्जी से
ही चुनूँगा ।4

दुख पाना और दुःख बाँटना, परम्परा है
जग की ।
इसी राह में मैं भी अपने नव पद-चिन्ह
रखूंगा । 5 ।

जबतक मुझमें में दम हैं, जबतक
चलती मेरी बात ।
नई राह को सही बात को, भूल के ना
देखूँगा ।6

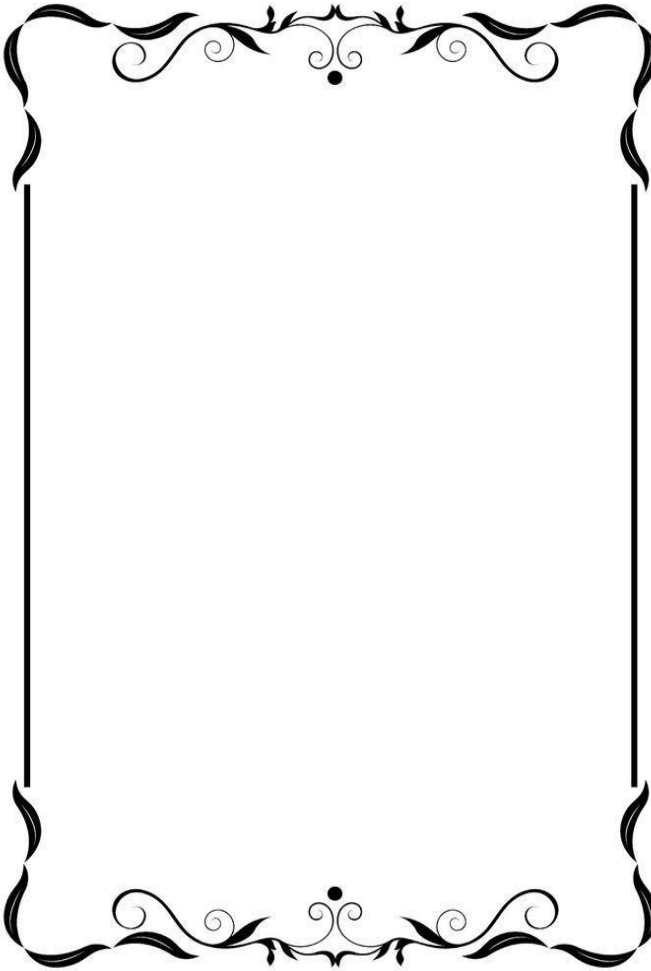

कोई नहीं पराया
स्वीकृति में आकर जाना है, प्रभाव
सत-भावअॅ का ।
चार अवस्था से अपनापन, कोई नहीं
पराया ।
उलझन-पीड़ा और समस्या, है भ्रम का
विस्तार ।
मन को करते शुष्क, और नकारात्मक
व्यर्थ विचार ।
शब्द सहायक बनते, विचार-धारा
अविरत चलती ।
व्यवहारअॅ में ढलकर, जागृति-क्रम में
स्वयँ उतरती ।
ऊपर से दिखता विरोध, व्यापक सहयोग
समाया ।
चार अवस्था से अपनापन, कोई नहीं
पराया । 1 ।
दशअॅ दिशाओं से सहयोग की, अद्भुत
महिमा देखूँ ।

भीतर-बाहर महाशून्य सह चलता नर्तन
देखूँ ।
मैं खो जाता चलते-चलते, बस तू ही रह
जाता ।
मैं-तू- तू-मैं साथ-साथ, अद्वैत स्वयँ घट
जाता ।
धृति को संग लिये चलते, साधक ने हर
सुख पाया ।
चार अवस्था से अपनापन कोई नहीं
पराया । 2 ।
स्वीकृति में आकर जाना है प्रभाव
सत-भावअॅ का ।
चार अवस्था से अपनापन कोई नहीं
पराया

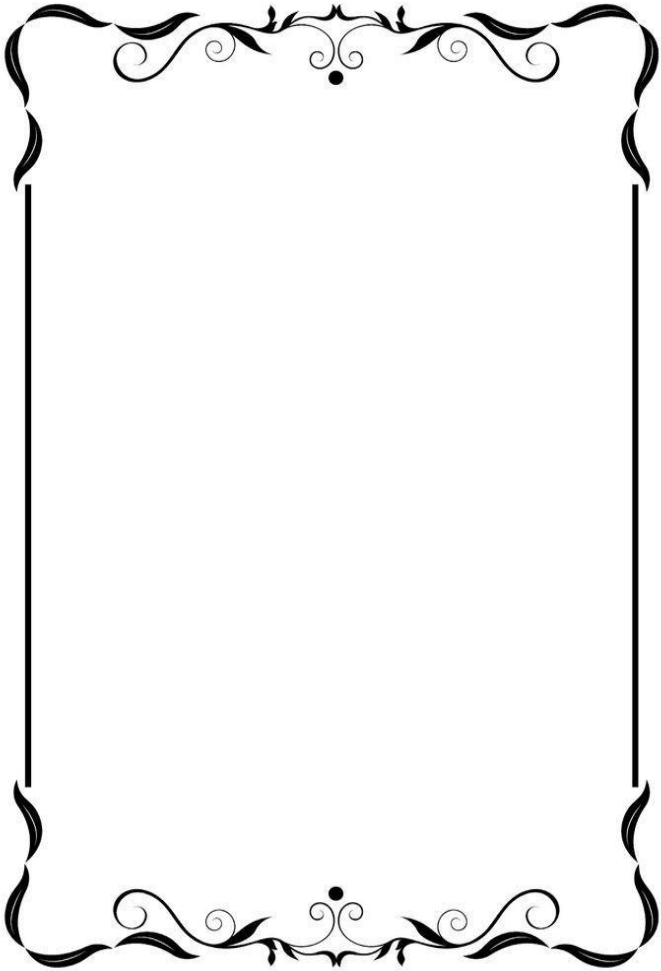

हाल तेरा मस्ताना

दादी जब भी सामने आये, हाल तेरा मस्ताना ।
हाथ-पाँव-चेहरा क्या, पूरा तन-मन हो दीवाना॥

दादा की गोदी से छूट के दादी-गोद में जाती ।
साफ-साफ चुगली कर देता तेरा भाग के जाना ।

बिस्तर पर लेटे-लेटे, दादी की दिशा में करवट ।
भोजन करते दौड़ पड़े, दादी का दिल दीवाना॥

पाँच मिनट भी सो ना सकती, रोकर
गोदी माँगे ।
सभी जानते तू चाहती दादी की गोद में
सोना॥

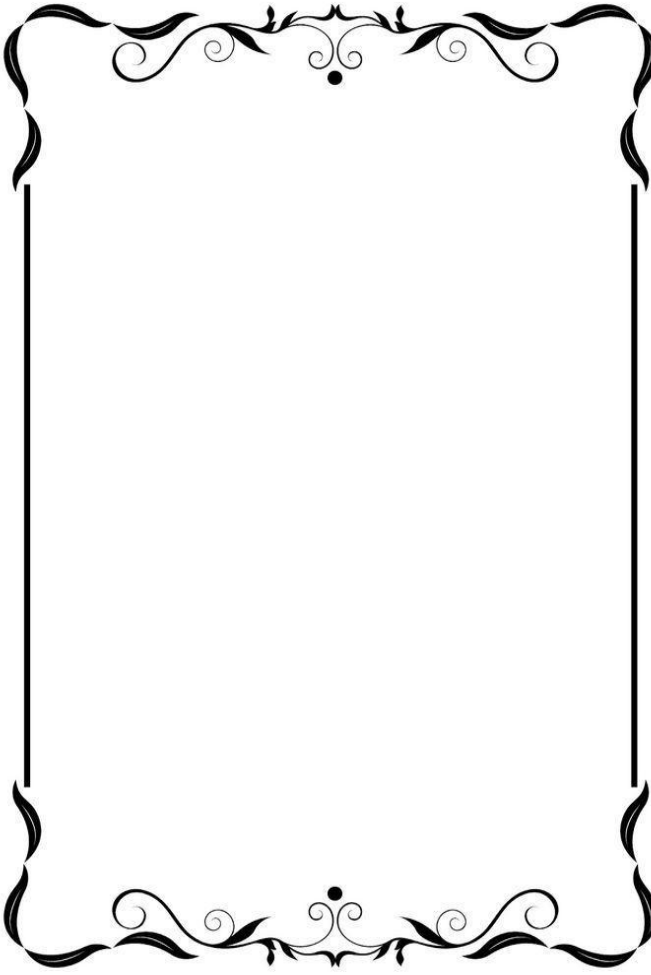

दादी बतियाये-गाये और खिल-खिल
तुम्हें हँसाये ।
दादा साँस रोककर देखे,खेल खुला
खिलखिलाना

घर का आंगन खिला-खिला,महका तेरी
साँसअँ से ।
हर प्रात शुभ बन जाता है, धन्य तेरा
मुस्काना ।

हर हरकत, हर झाँकी तेरी, साक्षी दिव्य
प्रभु की ।
बता न सकता महत-तत्व, लाचार मेरा
यह गाना ।

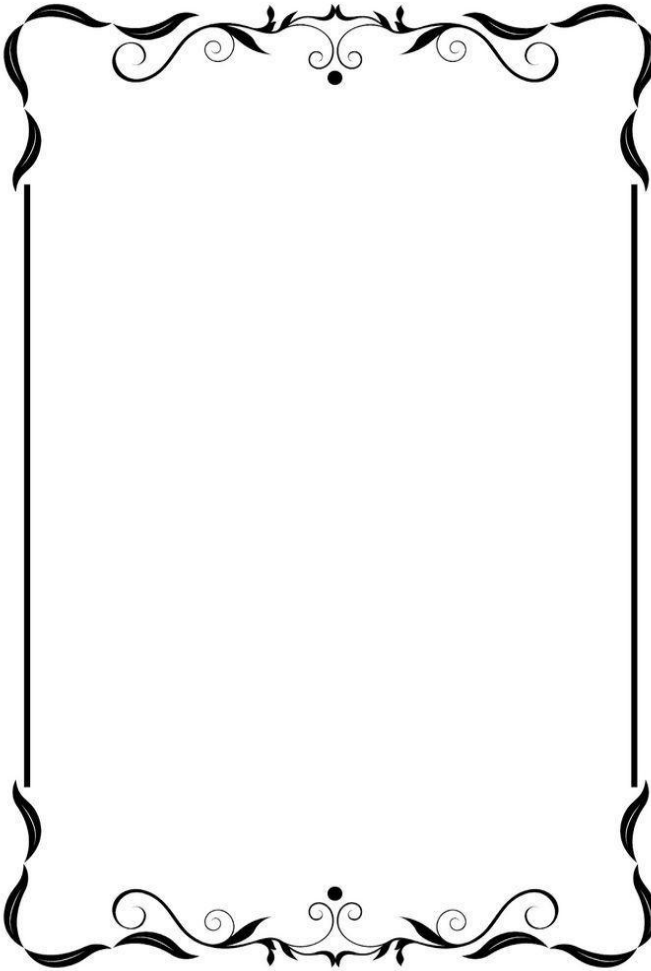

आजा मेरे पास

तेरे बिन मन सूना-सूना, तेरे बिन मैं उदास ।
तेरे बिन कुछ काम न होता, आजा मेरे पास॥

चार दिवस ऐसे गुजरे, जैसे मैं बुढा गया हूँ ।
युवा बने रहना चाहूँ, अब आजा मेरे पास॥

तेरी मीठी मुस्कानअॅ को तरसे सुबहो-शाम ।
टप्पू- टप्पू माँगे आँगन, आजा मेरे पास॥

कल आयेंगे बापू तेरे, तब मम्मा भी आये ।
कोई ऐसी जुगत बने, तू आज ही आये पास ।

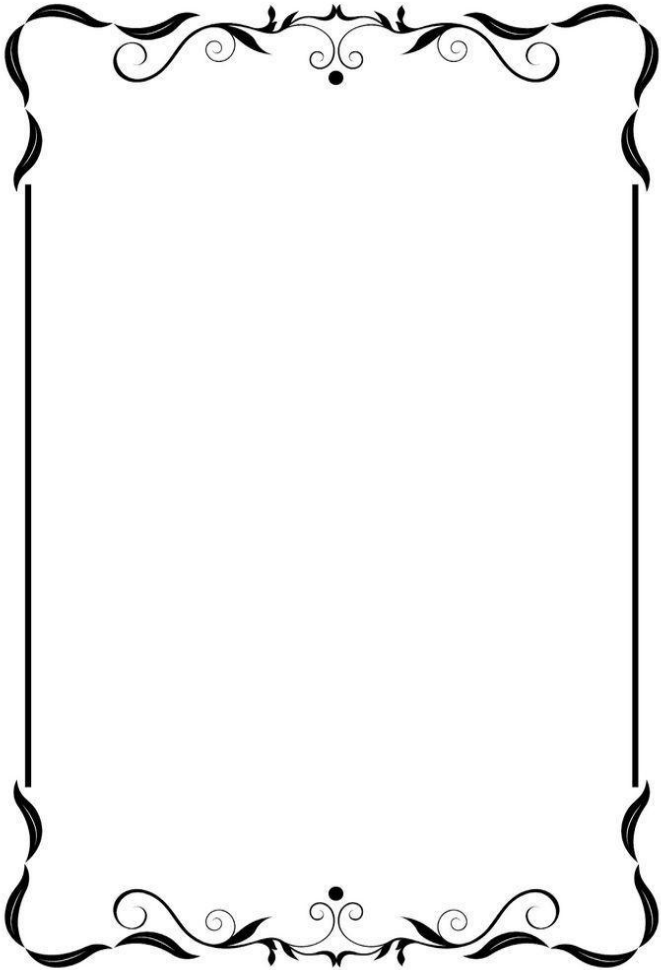

सह-अस्तित्व दर्शन

सोच रहा हूँ बात तेरी, अथवा निज की ही
सोच रहा मैं ?
फर्क नहीं लगता कोई भी, किस मग में हूँ
दौड़ रहा मैं ?

तुममें खुद को देख रहा, मुझमें तू पूरा
रची-बसी है ।
आत्मभाव विस्तारित हो, तुमसे मिलता ही
देख रहा मैं ।

और एक बिन्दु बतलाता, अन्य-जनअॅ में
छवि तुम्हारी ।
उम्र-लिंग या अन्य भेद के पार तुम्हें ही
देख रहा मैं ।

मुस्कानें, आँसू, खुशियाँ या गम आती-जाती
लहरें हैं ।

गहरे सागर के ठहराव में, दो को मिलते
देख रहा मैं ।

मैं देखूँ वह तुम भी देखो, सहयात्री बन पायें
मैं-तुम।
जागृत-मानव-परम्परा में, सह-अस्तित्व को
देख रहा मैं ।

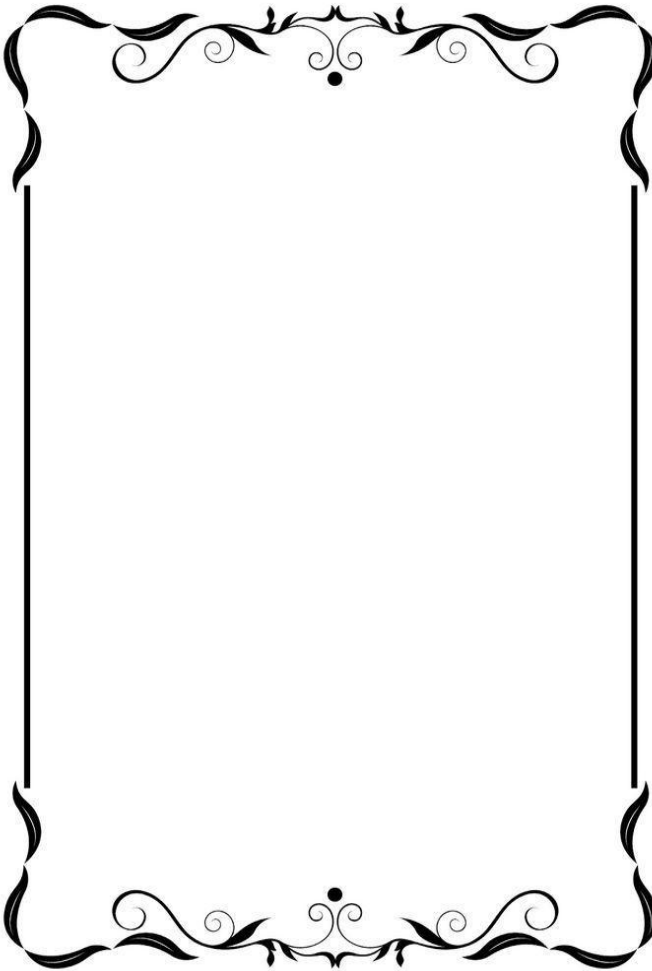

कविता की लड़ियाँ

पापा माने दफ्तर, बुआ फोन-फ्रैण्ड या पिक्चर ।
दादी किचन-लाईफ लाईन, लोरी-गोदी, बिस्तर ।

कितने दादा-ताऊ-चाचा-दीदी-दादी घर में ।
नित आते-जाते रहते, सब करते प्यार निरन्तर ।

मम्माजी याने कमरा, ननिहाल, या सुन्दर दिखना ।
रोते ही सब काम छोड़कर, आ जाती है निकटतर ।

दादाजी का पता नहीं कुछ,
दाढ़ी-माला-टोपी ।
नहीं दिखाई देते हैं अब, उनके काम
भयंकर ।

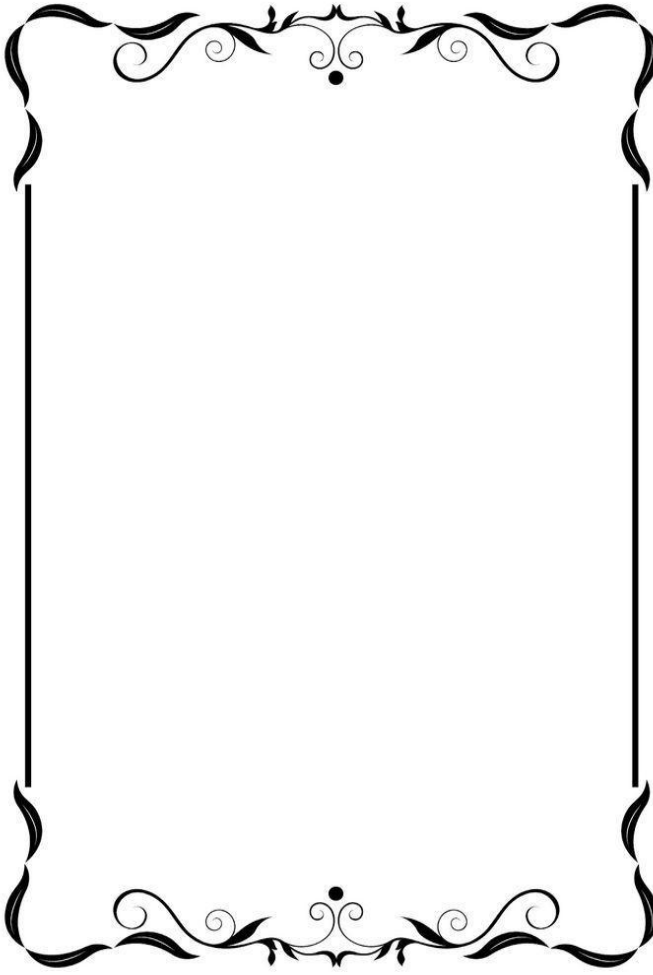

टपु-टपु सुनकर कान पक गये, पका है
माथा ।
लेकिन कविता की लड़ियाँ, मन में
लगती सुखकर ।

सारे ही मुझको क्यअॅ बच्चा समझ रहे
हैं बुद्धू ?
देखो मैंने खींच के रख दी है सबकी ही
पिक्चर ।

अपने ढंग की अलग बनूँ मैं, सबका
मान बढाऊँ ।

इनको ही लौटाना सारा, इनसे अभी समझकर ।

शीघ्र प्रकाश्य साहित्य

- ✔ पश्मीना शाल से साफ़ी (उपन्यास)
- ✔ संथारा और इच्छा मृत्यु : एक विश्लेषण
- ✔ औसान (उपन्यास)

- ✔ कहानी संग्रह
- ✔ नाटक संग्रह
- ✔ शतक सीरिज
- ✔ टूटता भारत
- ✔ रामचरितमानस और वेद

- ✔ पर्यावरण शतक
- ✔ साँप
- ✔ साधक के पत्र
- ✔ संस्मरण शतक
- ✔ श्राद्ध
- ✔ सिनेमा पहेली
- ✔ परम्परा-आराधक
- ✔ वर्तमान साँख्य-योग